Kerala Reader
केरल पाठावली

Hindi X हिंदी

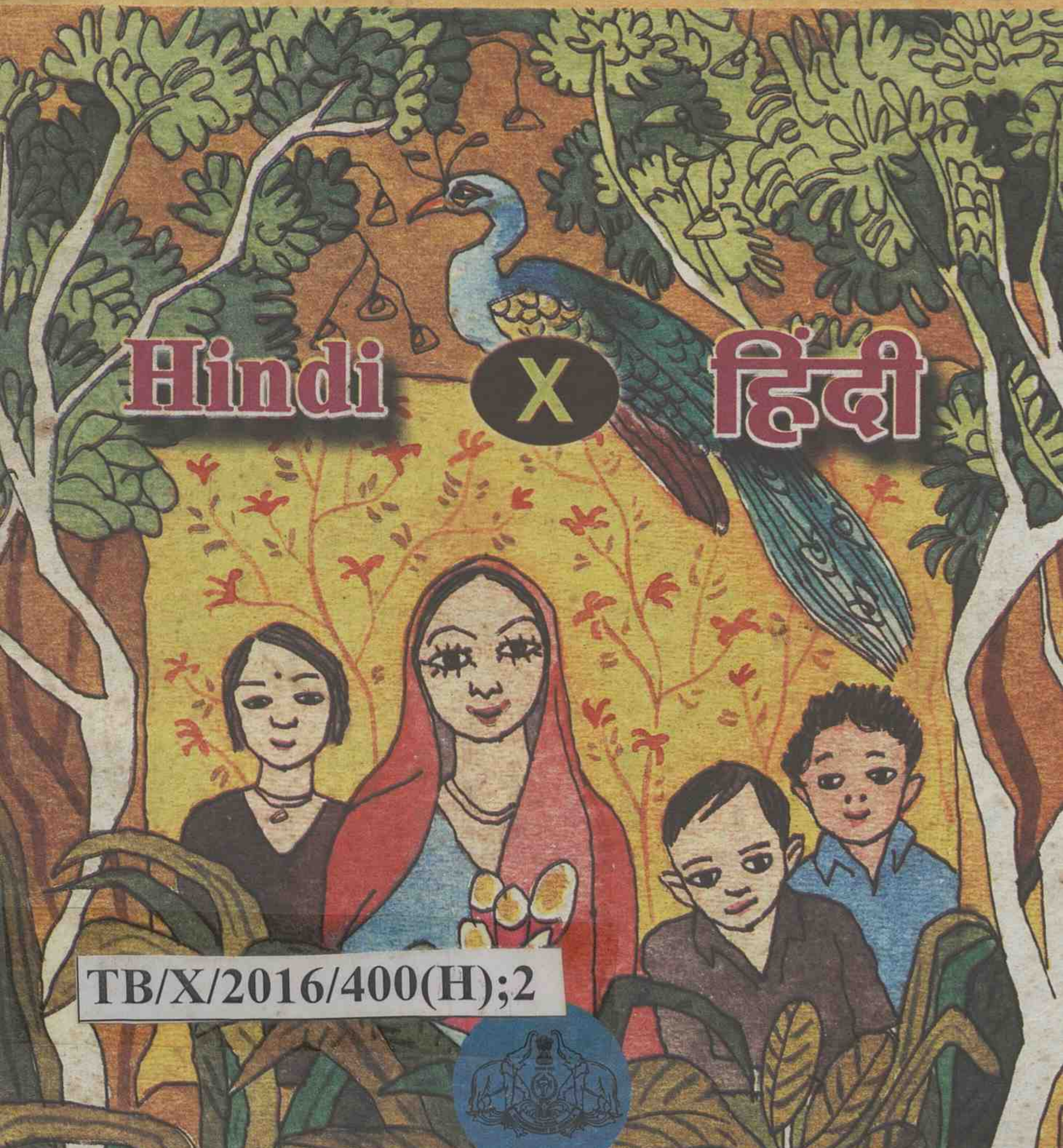

TB/X/2016/400(H);2

केरल सरकार
शिक्षा विभाग

भारत का संविधान

भाग 4 क

नागरिकों का मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य -

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद-भावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उनका परिरक्षण करे,

छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे

झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके, और

ट) छह और चौदह साल के बीच के अपने बच्चे/बच्ची को या अपने संरक्षण में रहनेवाले बच्चे/बच्ची को उसके माता-पिता या अभिभावक तदनुकूल शिक्षा प्रदान करने का अवसर दें।

TB / क2016 / 400 (H) ; 2 m

Hindi Padipura

हिंदी

कक्षा X

HINDI

केरल सरकार
शिक्षा विभाग

2016

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
केरल, तिरुवनंतपुरम

KT 41-1/Hindi - 10

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in
e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
Printed at : KBPS, Kakkanad, Kochi-30

© Department of Education, Government of Kerala

प्यारे बच्चो,

अब आपके हाथ में हिंदी की नई पाठ्यपुस्तक है। इसमें आपके पसंद की साहित्यिक विधाएँ-कहानियाँ, कविताएँ, लेख आदि सम्मिलित हैं, इन्हीं के साथ दैनिक व्यवहार में आनेवाली कुछ व्यावहारिक विधाएँ भी हैं। इनमें से गुज़रकर हिंदी भाषा और साहित्य के बुनियादी अंशों को समझने की भरसक कोशिश करें। इकाइयों से जीवनमूल्यों का प्रतिफलन आप ज़रूर पाएँगे। उन्हें भी अपनाने का प्रयास करें।

इसी आशा के साथ

डॉ.पी.ए. फ़ातिमा

निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान

एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

HINDI
CLASS - X

TEXTBOOK DEVELOPMENT TEAM

Sivaprasad M.R.	CBKMGHSS Puduppariyaram, Palakkad
Manoj Kumar .P.	GHSS Anamangad, Malappuram
Muralikrishna. G.	GHSS Pottassery, Palakkad
Anilkumar. N.	GHSS Kilimanoor, Thiruvananthapuram
Sreekumaran. B	GHSS Parambil, Kozhikkode
Abdul Raof T.K.	DUHSS Thootha, Malappuram
Manoju K.M.	GVHSS .Kumarakam, Kottayam
Sujeer babu E.	MMETHSS Melmuri, Malappuram
S. Saralambika.	GVHSS Kothala, Kottayam
P. Sugunan	AJMHS Chathanakottunada, Kozhikkode

EXPERTS

Dr. S. Thankamoni Amma
Former Prof. & Head, Department of Hindi, University of Kerala
Kariavattom, Thiruvananthapuram

Dr. N.SURESH
Hon.Director, Centre for Translation & Translation studies
University of Kerala, Thiruvananthapuram

Dr. B. Asok
Head, Dept. of Hindi
Govt. Brennen College Thalassery

ARTIST

Baijudev
GHSS Kumarapuram, Palakkad

ACADEMIC CO-ORDINATOR

Dr. REKHA R NAIR
Research Officer, SCERT

अनुक्रम

बीरबहूटी	कहानी
हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था	टिप्पणी
टूटा पहिया	कविता
बंटी	उपन्यास (अंश)

ऊँट बनाम रेलगाड़ी	संस्मरण
सबसे बड़ा शो मैन	जीवनी (अंश)
नीली आसमानी छतरी	फिल्मी गीत

अकाल और उसके बाद	कविता
ठाकुर का कुआँ	कहानी
एक थाल चाँद भरा	कहानी

अनुक्रम

बसंत मेरे गाँव का	लेख
जैसलमेर	यात्रावृत्त
जगहों के नाम	कविता

बच्चे काम पर जा रहे हैं	कविता
गुठली तो पराई है	कहानी
तुम लड़की हो तुम्हें क्यों पढ़ना है?	कविता

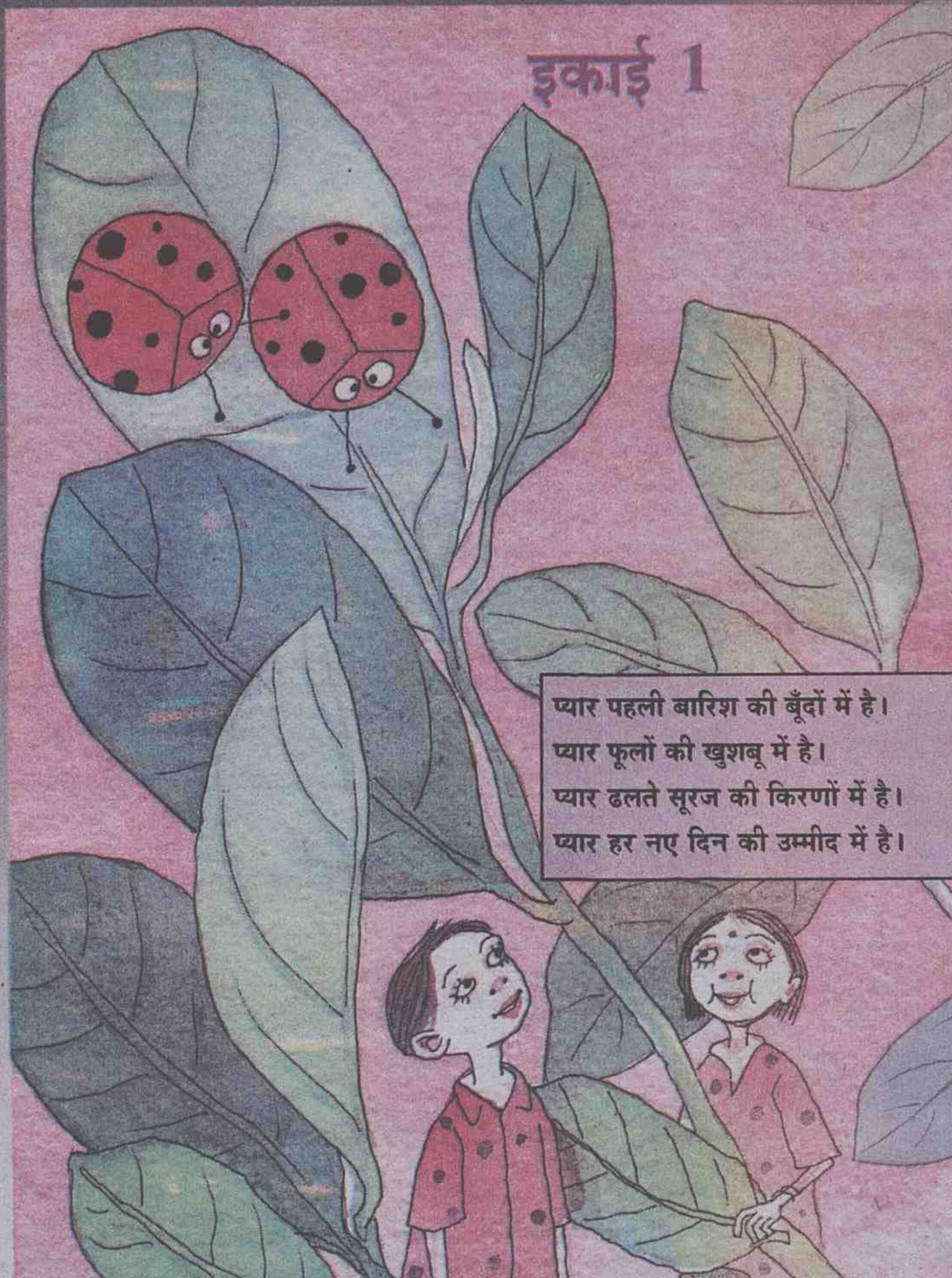
इकाई 1
प्यार पहली बारिश की बूँदों में है।
प्यार फूलों की खुशबू में है।
प्यार ढलते सूरज की किरणों में है।
प्यार हर नए दिन की उम्मीद में है।

बीरबहूटी

प्रभात

बादल बहुत बरस लिए थे। फिर भी बहुत सारा पानी उनमें बचा हुआ था। वे खेतों, जंगलों के ऊपर छाए हुए थे। सारा आकाश मेघों से भरा था। मेघों की छायाओं में गीली हवाएँ इधर-उधर घूम रही थीं। पेड़ों के तने अभी भी गीले थे। मूँगफलियों के हरे खेतों में पीले फूल अभी भी गीले थे। खेतों में छोटा-छोटा बाजरा उगा था। बाजरे के लंबे पतले पातों में पानी की बूँदें अटकी हुई थीं। बारिश की हवा में गीले खेतों और बारिश की हरियाली की गंध घुली हुई थी।

उन्हें बीरबहूटियों से मिलना होता था। सो वे स्कूल के लिए घर से कुछ समय पहले निकल आते थे। कस्बे से सटे इन खेतों में बीरबहूटियाँ खोजा करते थे। सुर्ख, मुलायम, गदबदी बीरबहूटियाँ। धरती पर चलती-फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूँदें। उनके बस्ते उनकी पीठ पर लदे होते थे, कंधों पर टंगे होते थे। वे एक-दूसरे के बहुत नज़दीक रहकर, बल्कि कहना चाहिए बिलकुल सटकर बीरबहूटियाँ खोजते थे। उन्हें देखने के लिए वे बारिश की गंध भरी भूरी ज़मीन पर बैठ जाया करते थे।

"बेला, देखो इस बीरबहूटी का रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है।" साहिल ने कहा।

"तुमने कुछ सुना बेला?"

"हाँ, सुना। पहली घंटी लग गई है।"

"लेकिन मुझे पैन में स्याही भी भरवानी है, दुकान से।"

* * *

उन्नीस सौ इक्यासी का साल। राजस्थान में जयपुर के नज़दीक सवारी गाड़ियों और मालगाड़ियों से सदा भरा फुलेरा जंक्शन। कस्बे की लगभग सूनी तंग गलियाँ। गलियों में खामोश खड़े बिजली के

खंभे। खंभों के बीच खिंची तारों की कतारें। इन गलियों में जहाँ-तहाँ दिखाई पड़ते मीठी घंटियाँ बजाते फेरी वाले। एक अंधेरी-सी गली में छह-सात गधों की खुरों की टापों की आवाज़ें। उनके पीछे चलता एक बदन उघाड़े कुम्हार। इसी दृश्य के बीच से गुज़रते हुए दो स्कूली बच्चे - बेला और साहिल। उन दिनों पैन में पाँच पैसे में नीली स्याही भरी जाती थी। स्टेशनरी की दुकानवाले ड्रॉपर से पैन में स्याही भरते थे।

* * *

पैन में कुछ स्याही बची थी, उसे साहिल ने ज़मीन पर छिड़क दिया। नई स्याही भरवाने के लिए दोनों दुकान पर पहुँचे।

"एक पैन स्याही भर दो।" साहिल से पहले ही बेला ने दुकानवाले से कहा।

"बेटा स्याही की बोतल अभी-अभी खाली हो गई है। अब तो कल ही मिल पाएगी।"

"लेकिन इसने तो पैन में जो स्याही थी उसे भी ज़मीन पर छिड़क दिया।" बेला बोली।

"बादल को देखकर घड़े को नहीं ढुलाना चाहिए।" दुकानवाले भैया ने कहा और पूछा "कौन-सी में पढ़ते हो?"

'बादल को देखकर घड़े को नहीं ढुलाना चाहिए।' दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा?

"पाँचवीं में।" साहिल ने ऐसे बुरे मन से बताया जैसे पाँचवीं में पढ़ना पाप हो।

"दोनों?" दुकानवाले भैया नें कहा।

"हाँ दोनों, और हम दोनों का सैक्शन भी एक ही है - ए।" बेला ने ऐसे खुश होकर बताया जैसे यह कोई बहुत बड़ी बात हो।

क्लास में दोनों पास-पास बैठते थे। कॉपी में काम करते तो दोनों कॉपी में काम करते थे। किताब पढ़ते तो दोनों किताब पढ़ते। बल्कि पाठ भी एक ही पढ़ते। साहिल "चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी" पढ़ता तो बेला भी "चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी" पढ़ती थी।

बेला कहती, "बहन जी पानी पीने चली जाऊँ?"

साहिल भी कहता, "बहन जी पानी पीने चला जाऊँ?"

गणित के माटसाब सुरेंदर जी का पीरियड खेल घंटी के बाद आता था। बच्चे उनसे काँपते थे और खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले ही अपनी-

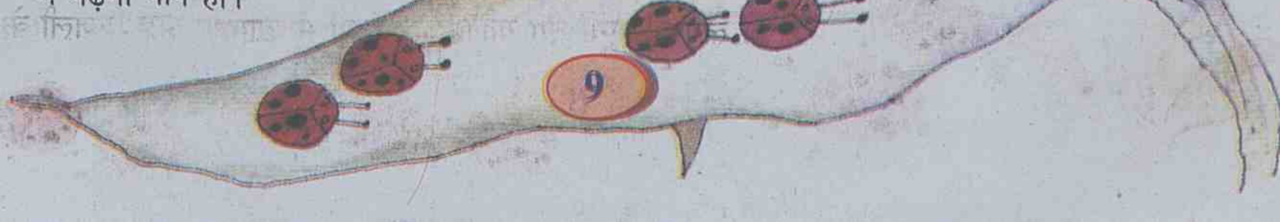

अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे। सुरेंदर जी माटसाब इसी पीरियड में कॉपी जाँचते थे। ज़रा-सी गलती पर बच्चों को इधर-उधर फेंक देते थे या झापड़ मारने लगते थे। उनका हाथ चलना शुरू होता तो रुकना भूल जाता था।

एक दिन सुरेंदर जी माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया। पर शायद जिस गलती को पाकर वे उसके बाल पकड़कर फेंकनेवाले थे, वह गलती थी ही नहीं। उन्होंने बेला को छोड़ दिया। बेला के भयभीत चेहरे को देखकर साहिल बुरी तरह डर गया था। उसने देखा कि बेला के पाँव अभी भी काँप रहे हैं। जैसे वह खड़े-खड़े अभी गिर जाएगी। सुरेंदर जी माटसाब ने कॉपी को उसके बैठने की जगह पर फेंकते हुए कहा, "बैठ अपनी जगह पर।"

बेला का मन बहुत खराब हो गया, माटसाब चाहे मुझे पीट लेते मगर साहिल के सामने नहीं। वह साहिल के सामने खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी, क्योंकि वह जानती थी कि वह साहिल की नज़र में बहुत अच्छी है। जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई।

दीपावली की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी। कोई उसे " होए हेए होए सफ़ेद पट्टी" कह रहा था तो कोई "सुल्ताना डाकू" तो कोई कुछ और कहकर चिढ़ा रहा था।

'जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई।' क्यों?

"ये क्या हो गया बेला" साहिल ने परेशान होते हुए पूछा।

"छत से गिर गई" बेला ने हँसते हुए कहा और कहा, "बहुत दिन हो गए, आज खेल घंटी में गांधी चौक में लंगड़ी टाँग खेलेंगे।"

"नहीं खेलेंगे। तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो...?"

"नहीं लगेगी" बेला ने ज़िद की। और वे हमेशा की तरह सारे बच्चों के साथ गांधी चौक की बालू में पूरी खेल घंटी लंगड़ी टाँग खेले। इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गांधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पड़ती जैसे और समय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो।

रविवार का दिन था। साहिल अपने घर में नीम के पेड़ की डाली पकड़कर झूम रहा था। वह एक स्टूल पर चढ़कर झूलता था। अचानक टूटे स्टूल की एक कील साहिल की पिंडली में लग गई। एक इंच गहरा गड्ढा हो गया।

"इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गांधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पड़ती जैसे और समय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो।" इसका मतलब क्या है?

उसे सरकारी अस्पताल में पट्टी बंधवाने के लिए ले जाया गया। उसने देखा कि दो लोगों को छोड़कर आगे बेला खड़ी है। सिर में पट्टी बंधवाने आई है। स्कूल आते-जाते हुए और कक्षा में कई दिनों तक दो ऐसे बच्चे दिखाई देते रहे जिनमें से एक के सिर पर पट्टी बंधी होती और एक की पिंडली में। सफ़ेद पट्टी वाले ये दोनों कहीं पर भी साथ ही दिखाई देते।

पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आ गया। दोनों छठी में आ गए। यह स्कूल पाँचवीं तक ही था।

"साहिल अब तुम कहाँ पढ़ोगे?" बेला ने पूछा।

"और तुम कहाँ पढ़ोगी बेला?" साहिल ने पूछा।

"मेरे पापा कह रहे थे कि तुझे राजकीय कन्या पाठशाला में पढ़ाएँगे और तुम?"

"मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे। वहाँ एक हॉस्टल है, घर से दूर वहाँ अकेला रहूँगा।"

"क्यों साहिल?"

"पता नहीं क्यों"

"तो यानी कि अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे?"

"नहीं। तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दिखाना।"

साहिल बेला का रिपोर्ट कार्ड देख रहा था और बेला साहिल का। आज आखिरी बारी वे एक-दूसरे की कोई चीज़ को छूकर देख रहे थे।

"तुम्हारी आँख में आँसू क्यों आ रहे हैं बेला?"

"मुझे क्या पता।" बेला ने डबडबाई आँखों से हँसते हुए कहा।

साहिल की आँखें बीरबहूटी की तरह लाल होने लगी थीं और उनमें बारिश की बूँदों-सा पानी भर गया था। बेला कहने लगी, "मैं चिढ़ाऊँ अब तुम्हें? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल।"

बारिशें आने में डेढ़ महीना बाकी था। लेकिन यह बारिशों से पहले की बारिश का एक दिन था। आसमान में घटाएँ घिरी थीं। धूल भरी तेज़ हवाएँ चल रही थीं। पानी बरस रहा था। फुलेरा कस्बे की बादल छाई एक गली में पाँचवीं से छठी में चली गई एक लड़की जा रही थी। उसके भूरे बाल बीरबहूटियों के रंग के लाल रिबन से बंधे थे। दूसरी दिशा को जाती एक गली में पाँचवीं से छठी में गया एक ग्यारह साल का लड़का जा रहा था। इसकी पिंडली में बीरबहूटी के रंग का-सा एक इंच लंबा चोट का निशान था।

'यह बारिश से पहले की बारिश का एक दिन था।' कहानी के प्रसंग में यह कैसे सार्थक होता है?

मिलान करें।

साहिल की आँखें	चलती-फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूँदें
चलती बीरबहूटियाँ	बीरबहूटी की तरह लाल
साहिल के आँसू	बीरबहूटी का रंग
साहिल की चोट	बारिश की बूँदें

प्रत्येक की तुलना किसके साथ की गई है? लिखें।

- साहिल की लाल आँखों की तुलना बीरबहूटी से की गई है।
-
-
-
-

- कहानी की घटनाओं को सूचीबद्ध करें।

- गीली ज़मीन पर बेला और साहिल का बीरबहूटियों को खोजना।
- पैन में स्याही भरना।
-
-
-
-

- घटनाओं के आधार पर पटकथा तैयार करें।

परखें,

आपकी रचना में

- दृश्य का वर्णन है।
- समय का उल्लेख है।
- पात्रों का उल्लेख है।
- स्वाभाविक और पात्रानुकूल संवाद है।

- अपनी किसी दोस्ती की याद पर टिप्पणी लिखें।

KT 41-2/Hindi - 10

■ पढ़ें।

बेला के पाँव अभी भी काँप रहे हैं।

स्याही की बोतल अभी-अभी खाली हो गई है।

पानी की बूँदें अटकी हुई थीं।

वाक्यों में रेखांकित परसर्गों पर ध्यान दें, जिनके अर्थ समान और रूप अलग-अलग हैं। क्यों? चर्चा करें।

■ ऐसे परसर्गयुक्त वाक्य कहानी से चुनकर लिखें।

-
-
-
-
-
-

प्रभात

युवा कवि प्रभात का जन्म राजस्थान के करौली में 1972 को हुआ। आप कवि होने के साथ-साथ कहानीकार भी हैं। कासीबाई,पानी की गाड़ियों में, झूसता रहा जाता रहा आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

अब पढ़ें, मन्नु भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' का अंश।

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

विनोद कुमार शुक्ल की कविता पर नरेश सक्सेना की टिप्पणी

नरेश सक्सेना

विनोद कुमार शुक्ल अपनी मौलिकता के साथ ही भाषा की अनगढ़ता के लिए विख्यात हैं। किंतु इस कविता में मौलिक होने के साथ ही वे काव्य शिल्प के सिद्ध कवि की तरह भी दिखाई देते हैं।

कविता के अर्थ इतने सहज और साफ़ हैं कि उन्हें व्याख्या की दरकार नहीं है। सरल शब्दोंवाले वाक्य स्वयं ही अपना मर्म कह देते हैं।

"व्यक्ति को मैं नहीं जानता था, हताशा को जानता था" कहते ही वे "जानने" की हमारी उस जानी-पहचानी रूढ़ि को तोड़ देते हैं जो व्यक्ति के नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानने को जोड़ती है। यदि हम किसी व्यक्ति को उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट से नहीं जानते तो हम कुछ नहीं जानते। सड़क पर घायल पड़े अपरिचित व्यक्ति को देखकर क्या हम कह सकते हैं कि उसे हम नहीं जानते? वास्तव में हम जानते हैं कि

'जानना' शब्द की लेखक की व्याख्या से आप कहाँ तक सहमत हैं?

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया
मैं ने हाथ बढ़ाया
मेरा हाथ पकड़कर वह खड़ा हुआ
मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
हम दोनों साथ चले
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे।

विनोद कुमार शुक्ल

यह व्यक्ति मुसीबत में है और इसे हमारी मदद की ज़रूरत है। यह कविता मुनष्य को मनुष्य की तरह "जानने" की याद दिलाती है।

कविता लगातार "नहीं जानने" और "जानने" का बयान करती जाती है। शिल्प की इस बारीक कारीगरी को देखें -

"वह मुझे नहीं जानता था, हाथ बढ़ाने को जानता था" "हम एक-दूसरे को नहीं जानते थे, साथ-साथ चलना जानते थे" यह "नहीं जानना" और "जानना" कविता में किसी लोकगीत के स्थायी की तरह बार-बार लौटता है। गद्य में लिखी हुई किसी कविता में लिरिकल या गीतात्मकता का बोध इस खूबी के साथ हिंदी की किस कविता में आया है, याद नहीं आ रहा।

जैसे किसी गज़ल में आखरी शेर के आखरी शब्द, श्रोताओं की ज़ुबान पर आप से आप आ जाते हैं, वैसे ही इस कविता के अंतिम शब्द– यानी "साथ-साथ चलना" के बाद यदि कविता पाठ रोक दिया जाए तो सुनने वाले खुद वाक्य पूरा कर देंगे और कहेंगे "जानते थे"।

कविता के शिल्प पक्ष पर लेखक के क्या-क्या निरीक्षण हैं?

यह कविता 'जानना' शब्द के रूढ़िग्रस्त अर्थ को पूरी तरह से बदल देती है। इस कविता की पहली दो पंक्तियों में ही कवि अपनी पूरी बात कह देता है। शेष पंक्तियाँ उसी कहे गए को और सघन, और गहरा करती हैं। कविता का संदेश है कि – दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है – जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं।

किंतु यह संदेश कविता में उपदेश की तरह नहीं आता।

कविता पर टिप्पणी लिखते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना है? नरेश सक्सेना की टिप्पणी के आधार पर आकलन सूची तैयार करें।

नरेश सक्सेना

जन्म : 16 जनवरी 1931 ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

नरेश सक्सेना समकालीन हिंदी साहित्यक्षेत्र के विलक्षण कवि हैं। संप्रति कविताओं के अतिरिक्त नाटक, फिल्म, संपादन के क्षेत्र में भी आप सक्रियता से महत्वपूर्ण कार्य करते रहते हैं। समुद्र पर हो रही है बारिश (कविता संग्रह), आदमी का आ (नाटक) आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। साहित्य के लिए आपको 2000 का पहल सम्मान मिला है तथा फि... के लिए 1992 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार।

विनोद कुमार शुक्ल

जन्म: 1 जनवरी 1937 (मध्यप्रदेश)

आप समकालीन हिंदी साहित्य क्षेत्र में कवि और कथाकार के रूप में विख्यात हैं। सब कुछ होना बचा रहेगा, वह आदमी चला गया, नया गरम कोट पहनकर विचार की तरह, लगभग जयहिंद आदि आपके काव्य संग्रह हैं। खिलेगा तो देखेंगे तथा दीवार में एक खिड़की रहती थी दोनों आपके उपन्यास हैं। मध्यप्रदेश शिखर सम्मान (1995) और मैथिली शरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान (1996) आदि से आप सम्मानित हुए हैं।

टूटा पहिया

धर्मवीर भारती

मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत!
क्या जाने; कब
इस दुरूह चक्रव्यूह में
अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ
कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाए!
अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बड़े-बड़े महारथी
अकेली निहत्थी आवाज़ को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें
तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ!
मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत
इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले!

■ पढ़ें,

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बड़े-बड़े महारथी
अकेली निहत्थी आवाज़ को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें।

-इन पंक्तियों के आशय पर चर्चा करें।

■ पढ़ें,

तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ!

-इन पंक्तियों में चर्चित पौराणिक संदर्भ वर्तमान परिवेश में कहाँ तक प्रासंगिक है?

■ पढ़ें,

इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले!

-इन पंक्तियों से कवि क्या बताना चाहते हैं?

■ आज के सामाजिक परिवेश में 'अभिमन्यु' और 'टूटा पहिया' किन-किन के प्रतीक हैं?

अभिमन्यु	टूटा पहिया
◆	◆
◆	◆
◆	◆
◆	◆

■ 'टूटा पहिया' कविता पर टिप्पणी लिखें।

धर्मवीर भारती

जन्म : 25 दिसंबर 1926, इलाहाबाद

निधन : 4 सितंबर 1997

आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक।

प्रमुख कृतियाँ: मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग (कहानी संग्रह)
ठंडा लोहा, कनुप्रिया (काव्य) गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा (उपन्यास)
अंधायुग (काव्य नाटक)

पुरस्कार : पद्मश्री, संगीत नाटक अकादमी, भारत भारती, व्यास सम्मान

उपन्यास का अंश

बंटी

मन्नू भंडारी

ममी ड्रेसिंग टेबुल के सामने बैठी तैयार हो रही हैं। बंटी पीछे खड़ा चुपचाप देख रहा है। ममी जब भी कॉलेज जाने के लिए तैयार होती हैं, बंटी बड़े कौतूहल से देखता है। जान तो वह आज तक नहीं पाया, पर उसे हमेशा लगता है कि ड्रेसिंग टेबुल की इन रंग-बिरंगी शीशियों में, छोटी-बड़ी डिबियों में ज़रूर कोई जादू है कि ममी इन सबको लगाने के बाद एकदम बदल जाती हैं। कम से कम बंटी को ऐसा ही लगता है कि उसकी ममी अब उसकी नहीं रहीं, कोई और ही हो गई।

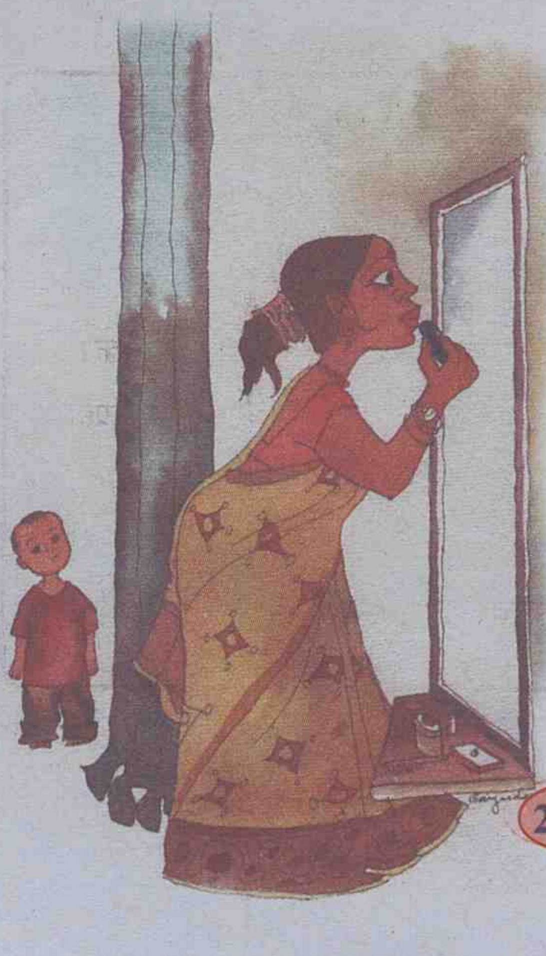

पूरी तरह तैयार होकर, हाथ में पर्स लेकर ममी ने कहा "देखो बेटे, धूप में बाहर नहीं निकलना, हाँ।" फिर फूफी को आदेश दिया। "बंटी जो खाए वही बनाना, एकदम बंटी की मर्जी का खाना, समझीं।"

चलने से पहले ममी ने उसका गाल थपथपाया। बालों में उँगलियाँ फँसाकर बड़े प्यार से बाल झिंझोड़ दिए। पर बंटी जैसे बुत बना खड़ा रहा। बाँह पकड़कर झूला नहीं, किसी चीज़ की फरमाइश नहीं की। ममी ने खींचकर उसे अपने पास सटा लिया। पर एकदम चिपककर भी बंटी को लगा जैसे ममी उससे बहुत दूर हैं। और फिर वे सचमुच ही दूर हो गई। उनकी चप्पल की खटखट जब बरामदे की सीढ़ियों पर पहुँची तो बंटी कमरे के दरवाज़े पर आकर खड़ा

हो गया। और ममी जब फाटक खोलकर, सड़क पार करके, घर के ठीक सामने बने कॉलेज में घुसीं तो बंटी दौड़कर अपने घर के फाटक पर खड़ा हो गया। सिर्फ़ दूर जाती हुई ममी को देखने के लिए। वह जानता है, ममी अब पीछे मुड़कर नहीं देखेंगी। नपे-तुले क़दम रखती हुई सीधी चलती चली जाएँगी। जैसे ही अपने कमरे के सामने पहुँचेंगी चपरासी सलाम ठोंकता हुआ दौड़ेगा और चिक उठाएगा। ममी अंदर घुसेंगी और एक बड़ी-सी मेज़ के पीछे रखी कुर्सी पर बैठ जाएँगी। मेज़ पर ढेर सारी चिट्ठियाँ होंगी। फाइलें होंगी। उस समय तक ममी एकदम बदल चुकी होंगी। कम से कम बंटी को उस कुर्सी पर बैठी ममी कभी अच्छी नहीं लगीं।

पहले जब कभी उसकी छुट्टी होती और ममी की नहीं होती, ममी उसे भी अपने साथ कॉलेज ले जाया करती थीं। चपरासी उसे देखते ही गोद में उठाने लगता तो वह हाथ झटक देता। ममी के कमरे के एक कोने में ही उसके लिए एक छोटी-सी मेज़-कुर्सी लगवा दी जाती, जिसपर बैठकर वह ड्राइंग बनाया करता। कमरे में कोई भी घुसता तो एक बार हँसी लपेटकर, आँखों ही आँखों में ज़रूर उसे दुलरा देता। तब वह ममी की ओर देखता। पर उस कुर्सी पर बैठकर ममी का चेहरा अजीब तरह से सख़्त हो जाया करता है। लगता है, मानो अपने असली चेहरे पर कोई दूसरा चेहरा लगा लिया हो। ममी के पास ज़रूर एक और चेहरा है। चेहरा ही नहीं, आवाज़ भी कैसी सख़्त हो जाती है! बोलती हैं तो लगता है जैसे डाँट रही हों। बंटी को ममी बहुत ही कम डाँटती हैं। बस, प्यार करती हैं इसीलिए यों सख़्त चेहरा डाँटती, प्रिंसिपल की कुर्सी पर बैठी ममी उसे कभी अच्छी नहीं लगतीं।

वहाँ उसके और ममी के बीच में बहुत सारी चीज़ें आ जाती हैं। ममी का नकली चेहरा, कॉलेज, कॉलेज की बड़ी-सी बिल्डिंग, कॉलेज की ढेर सारी लड़कियाँ, कॉलेज के ढेर सारे काम! थोड़ी-थोड़ी देर में बजनेवाले घंटे, घंटा बजने पर होनेवाली हलचल... इन सबके एक सिरे पर वह रहता है चुपचाप, सहमा-सा और दूसरे पर ममी रहती हैं - किसी को आदेश देती हुई, किसी के साथ सलाह-मशवरा करती हुई, किसी को डाँटती हुई। और इसीलिए उसने कॉलेज जाना छोड़ दिया। घर में चाहे वह अकेला रहे, पर वहाँ नहीं जाता। वहाँ किसके पास जाए? ममी तो वहाँ रहती नहीं। रहती हैं बस एक प्रिंसिपल, जिनके चारों ओर बहुत सारे काम, बहुत सारे लोग रहते हैं। नहीं रहता है तो केवल बंटी।

"वहाँ उसके और ममी के बीच में बहुत सारी चीज़ें आ जाती हैं। वह बंटी की अपनी दुनिया नहीं थी।..."

- **इस हालत में बंटी की चिंताएँ क्या-क्या हो सकती हैं? लिखें।**

मन्नू भंडारी

जन्म : 3 अप्रैल 1931 भानपुरा नगर (मध्यप्रदेश)

आप हिंदी की आधुनिक कहानीकार और उपन्यासकार हैं। माँ-बाप के विवाह-संबंध के टूटने की त्रासदी में घुट रहे एक बच्चे को केंद्रीय विषय बनाकर लिखे गए आपके उपन्यास 'आपका बंटी' को हिंदी के सफलतम उपन्यासों की श्रेणी में रखा जाता है। एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, यही सच है, त्रिशंकु (कहनी संग्रह) महाभोज, कलवा (उपन्यास) रजनीगंधा, निर्मला,दर्पण (फिल्म पटकथा) बिना दीवारों का घर, महाभोज (नाटक) एक कहानी यह भी (आत्मकथा) आदि आपकी अन्य रचनाएँ हैं। 2008 में आप व्यास सम्मान से पुरस्कृत हुईं।

मदद लें...

बीरबहूटी

खामोश	-	मौन
गदबदी	-	मुलायम
नज़दीक	-	पास, निकट
पात	-	पत्ता
पिंडली	-	घुटने के पीछे का निचला मांसल भाग
फुलेरा	-	फूल की बनी छतरी
फुसफसाना	-	मंद स्वर में कहना
बस्ता	-	थैला
बाजरा	-	अन्न का एक पौधा एवं उसका दाना
बीर बहूटी	-	गहरे लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा
बेडौल	-	कुरूप
मूँगफली	-	നിലക്കടല - நிலக்கடலை ಕಶಿಕಡಲೆ
विराट	-	विशाल
सरीखा	-	समान
सुर्ख	-	रक्त वर्ण

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

अनगढ़	-	बिना गढ़ा हुआ
अहसास	-	अनुभव
ओहदा	-	പദവി - பதவி ಪದವಿ

कारीगरी - शिल्पविद्‍या

ज़ुबान - നാവ് - நாக்கு

दरकार - ആവശ്യകത ज़रूरत - தேவை ಅಗತ್ಯತೆ

बारीक - सूक्ष्म

हताशा - निराशा

टूटा पहिया

अक्षौहिणी - चतुरंगिणी सेना

कुचलना - रौंदना, ചവിട്ടി മെതിക്കുക to trample -

चुनौती - ललकार വെല്ലുവിളി challenge - சவால்

निहत्थी - ആയുധമില്ലാത്ത unarmed शस्त्रहीन
ஆயுதமில்லாமல்

पहिया - ചക്രം wheel சக்கரம்

फेंकना - എറിയുക to throw - எறிதல்

लोहा लेना - ധീരമായി എതിരിടുക to confront सामना करना -
வீரத்துடன் எதிரிடுதல்

बंटी

झटक देना - തള്ളിമാറ്റുക, தள்ளி மாற்றுவது
ದೂಡು

दुलारा देना	- ലാളിക്കുക, கொஞ்சு ಲಾಲನೆ ಮಾಡು
फरमाइश करना	- നിർദ്ദേശിക്കുക, ആവശ്യപ്പെടുക, தேவைப்படு ಆಜ್ಞೆಕೊಡು
बुत	- പ്രതിമ statue, சிலை ವಿಗ್ರಹ
मशवरा	- सलाह
सटा लेना	- ചേർത്ത് നിർത്തുക, ஒன்றாக நிறுத்து ಸೇರಿಸು
सलाम ठोंकना	- സല്യൂട്ട് ചെയ്യുക, வணக்கம் செய் ಪ್ರಣಾಮ ಮಾಡು
सहमाना	- ചൂളുക, പരിഭ്രമിക്കുക, பதற்றப்பசு ಹೆದರಿಸು

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्रवाचन करता है और आशय प्रस्तुत करता है।
- कहानी पढ़ता है और आशय प्रस्तुत करता है।
- कहानी की घटनाओं को चुनकर लिखता है।
- कहानी के आधार पर पटकथा लिखता है।
- दोस्ती की याद करते हुए टिप्पणी लिखता है।
- संबंधकारक परसर्ग को पहचानता है और परसर्गयुक्त वाक्यों को चुनकर लिखता है।
- टिप्पणी पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता पर लिखी टिप्पणी का आकलन सूची तैयार करता है।
- कविता पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता पर टिप्पणी लिखता है।

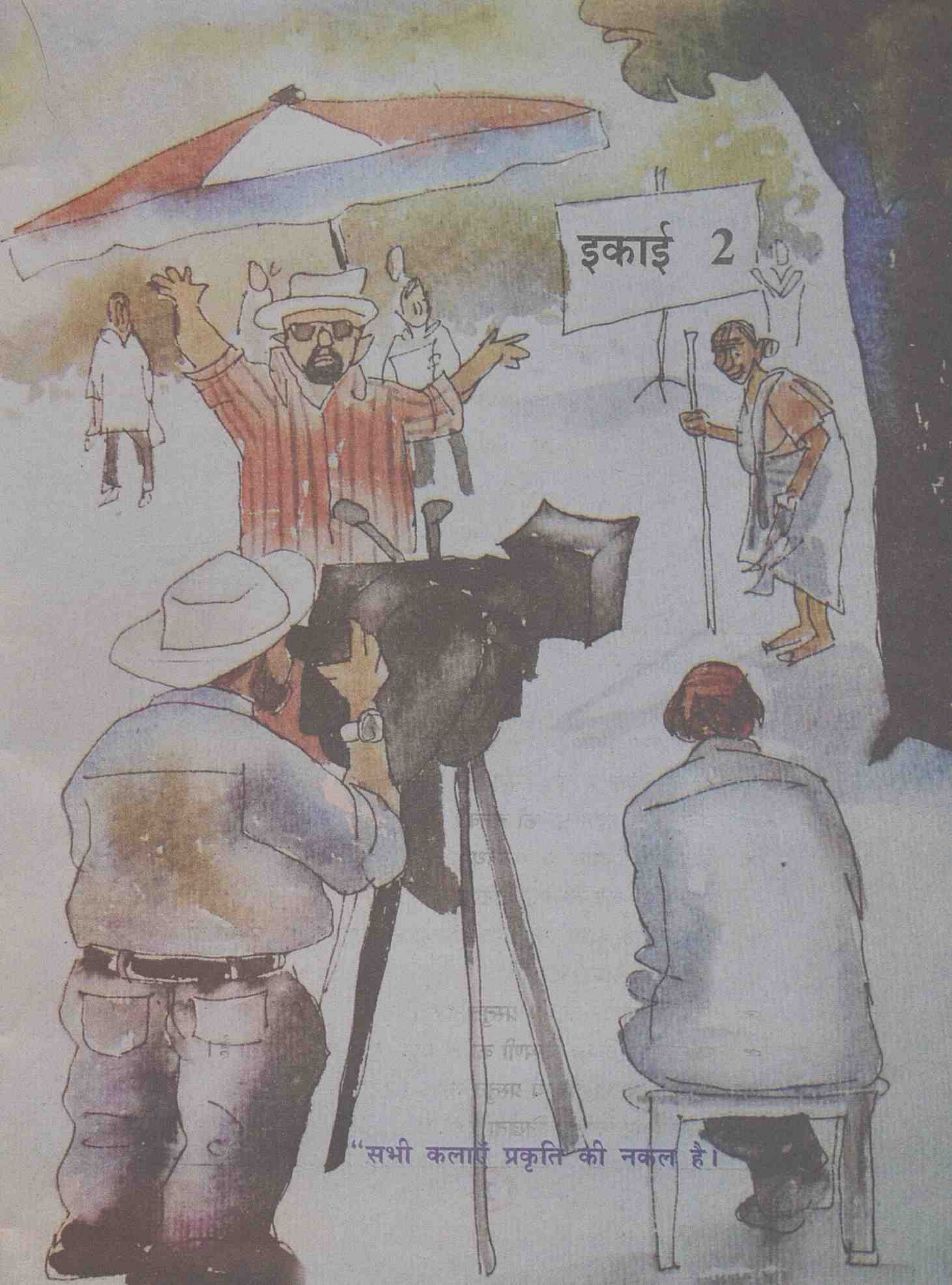
इकाई 2
"सभी कलाएँ प्रकृति की नकल है।

ऊँट बनाम रेलगाड़ी

सत्यजीत् राय
अनुवाद : संजय भारती

फिल्म बनाने के काम को मोटामोटी तीन भागों में बाँटा जा सकता है– लिखना, फिल्माना और फिल्माए गए दृश्यों को जोड़ना। फिल्म की कहानी का फिल्मांकन यानी शूटिंग का स्टूडियो के बाहर होना बड़े झमेले और मेहनत का काम होता है। पिछले पच्चीस बरसों में मुझे फिल्म की शूटिंग के सिलसिले में भारत के कई हिस्सों में जाना पड़ा। शूटिंग में झमेला क्या होता है यह एक किस्से से जानते हैं...

-सत्यजित राय

सोनार केल्ला (सोने का किला) फिल्म में ऊँट को लेकर एक मज़ेदार घटना है-

रहस्य- रोमांच वाले उपन्यास लेखक लालमोहन गांगुली और जटायु का सपना रेगिस्तान में ऊँट की सवारी करने का है। कथा के अंत की ओर यह सपना साकार होने का अवसर आता है। किसी षड्यंत्र के चलते जैसलमेर जाने के रास्ते में फेलू की गाड़ी का टायर पंक्चर हो जाता है और फेलू, तोपसे, लालमोहन को वहीं रुके

रहना पड़ता है। थोड़ी देर बाद उनको ऊँटों का एक झुंड दिखाई देता है। आठ मील दूर रामदेवरा स्टेशन तक पहुँचकर अगर इंतज़ार करें तो आधी रात वाली ट्रेन उन्हें मिल सकती है। फेलू ने तय किया कि वे ऊँट से स्टेशन तक जाएँगे। फेलू और तोपसे को तो कोई चिंता ही नहीं, लेकिन जटायु तो नाम भर के लिए जटायु है। उँट को सामने देखते ही उनकी रूह काँप गई। बाप रे, क्या जानवर है! नशेड़ियों की तरह अधखुली और मदहोश आँखें, ऊबड़-खाबड़ कुदाल जैसे दाँत, लटके हुए होंठ उलटकर न जाने क्या चबाते रहते हैं। और हिंडोला खाते हुए चलता है तो लगता है जैसे सवार की हड्डी-पसली ही अलग हो जाएगी। लेकिन कोई उपाय भी तो नहीं। फेलू और तोपसे फटाफट ऊँट की पीठ पर चढ़ जाते हैं लेकिन लालमोहन किसी तरह बड़ी मुश्किल से चढ़ पाता है। फेलू ऊँटवालों को आदेश देता है, "चलो रामदेवरा"।

ऊँटों का काफिला चल रहा है और लालमोहन खतरे की घड़ी गिन रहा है। बीच रास्ते में अचानक तोपसे ने देखा कि दूर से एक रेलगाड़ी चली आ रही है। उसको किसी तरह रुकवा लिया तो रामदेवरा में दस घंटे इंतज़ार नहीं करना होगा। दौड़ते-दौड़ते ऊँटों का काफिला पटरी के पास पहुँचता है। फेलू ज़ेब से रूमाल निकालकर तेज़ी से हिलाता है लेकिन गाड़ी ज़ोर-से सीटी बजाते हुए सामने से निकल जाती है। मज़बूरन उन्हें रामदेवरा के लिए ऊँटों से ही

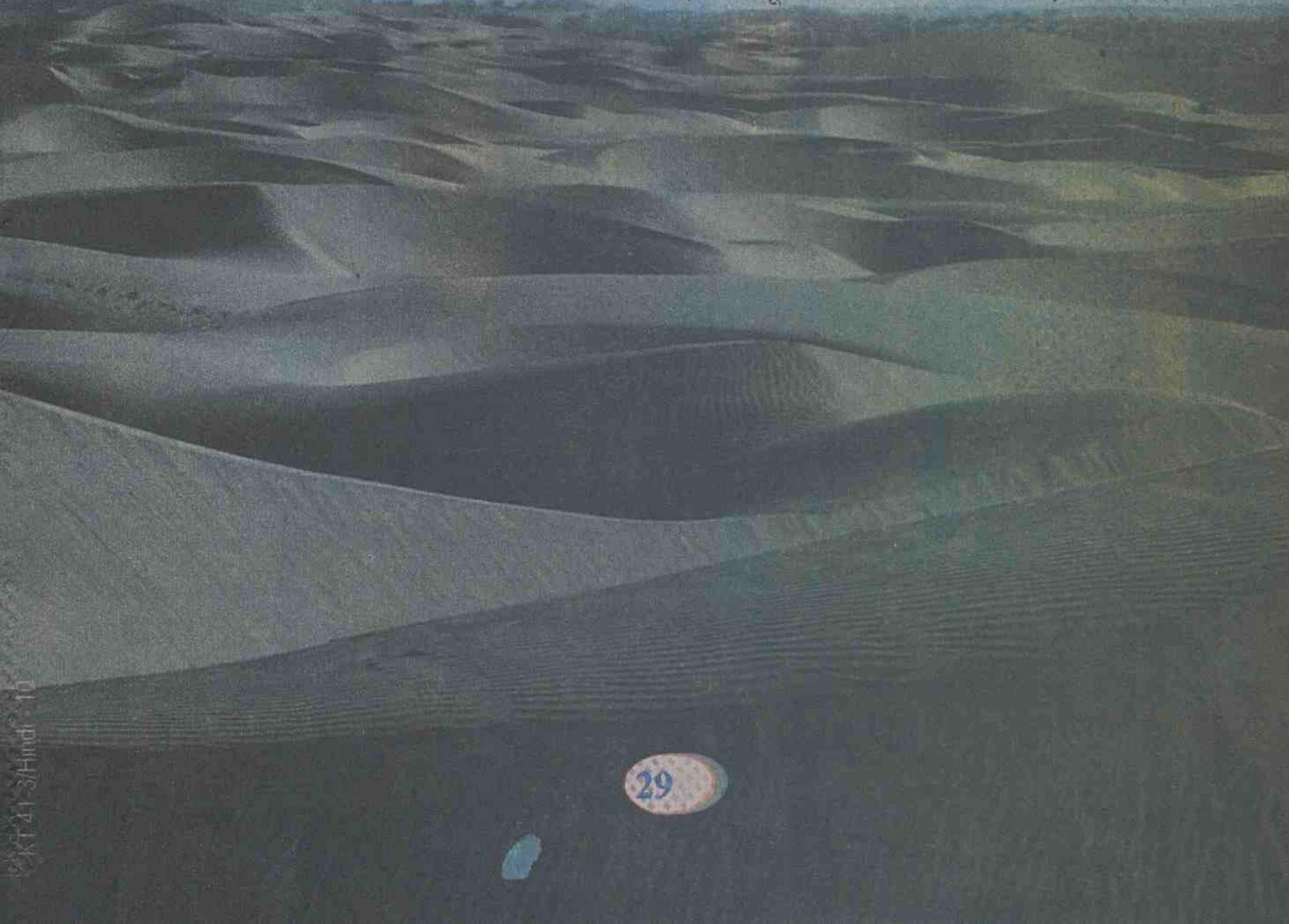

रवाना होना पड़ता है।

ऊँट का अध्याय बस इतना-सा ही है। लेकिन इसे फिल्माने के लिए हमें क्या-क्या न करना पड़ा था, यह जानकर तुम्हें झमेले का कुछ तो अंदाज़ा मिल ही जाएगा। शूटिंग के लिए जिस स्थान को चुना गया था वहाँ दूर-दूर तक कोई घर-बार न था। चारों तरफ़ रेत ही रेत और बीच-बीच में सूखी घास और छोटी-छोटी कंटीली झाड़ियाँ।

इसके बीच से गुज़रती मीटर गेज लाइन का ओर-छोर नहीं दिखता था। इस रेलवे लाइन के किनारे-किनारे जैसलमेर जानेवाली पक्की सड़क थी। रेलवे लाइन अगर रास्ते से थोड़ी और दूर होती तो हमारे लिए वहाँ शूटिंग करना संभव नहीं होता। ऊँट जब रेलगाड़ी की ओर दौड़कर जाएँगे तब उनके साथ-साथ कैमरे को भी दौड़ना होगा यानी कैमरे को खुली जीप में रखना होगा। यानी रेलवे लाइन के पास पक्की सड़क होना ज़रूरी है।

जोधपुर से जैसलमेर तक के डेढ़ सौ मील के रास्ते को छान मारने के बाद एकमात्र वह ऐसी जगह मिली जहाँ हम जो-जो चाहते थे वह सब कुछ था। वह जगह जैसलमेर से करीब सत्तर मील दूर जोधपुर के रास्ते में थी। ऊँटों का दल वहाँ से सात मील दूर खाची गाँव से आना तय हुआ। ऊँटवालों को हमने कह रखा था कि वे ऊँटों को सजा-धजाकर लाएँ। ऊँटों को जिस निगाह से हम लोग देखते हैं राजस्थान के लोग उस निगाह से बिलकुल भी नहीं देखते हैं। ऊँट देखकर हमें हँसी-सी आती है लेकिन उनको नहीं। क्योंकि ऊँट तो उनके दोस्त हैं, रेगिस्तान का एकमात्र सहारा। इस दोस्त को

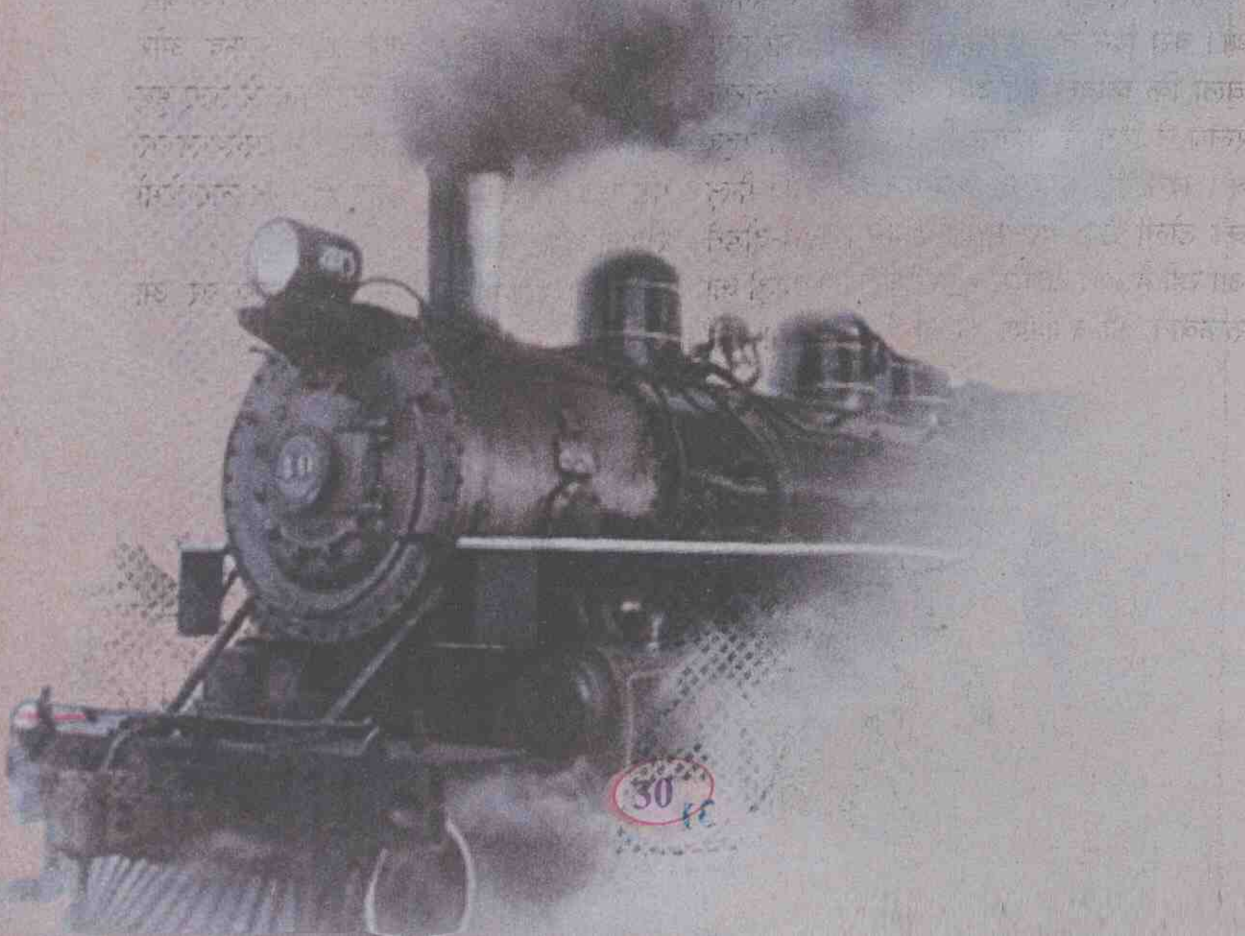

सजाने का चलन राजस्थान के लोगों में सदियों से है। सुंदर-सुंदर झालर, गहने वगैरह उनपर कितने फबते हैं। बहरहाल, ऊँटवालों ने कहा था कि वे दोपहर तक वहाँ पहुँच जाएँगे।

ऊँटों का इंतज़ाम हुआ तो मामला रेलगाड़ी पर अटक गया। जोधपुर से सुबह एक गाड़ी सत्तर मील दूर पोखरण तक जाती थी। उसी रेलगाड़ी का शूटिंग में इस्तेमाल किया जाएगा, यह हमने तय कर रखा था। पोखरण, जोधपुर और जैसलमेर के बीच में पड़ता है। हमारी पसंद की जगह पोखरण से बीस मील पश्चिम यानी जैसलमेर की तरफ़ थी। लेकिन हमें भरोसा था कि रेलवे अधिकारियों से बातचीत करके हम उस ट्रेन को आगे वहाँ ले जाएँगे जहाँ शूटिंग होनी थी।

हमने शूटिंग का सारा इंतज़ाम कर लिया था। बस दिन तय करना बाकी था। तभी पता चला कि कोयले का दाम बढ़ जाने के कारण रेलवे ने दिन में जानेवाली उस गाड़ी को रद्द कर दिया है। अब तो सर्वनाश हो गया। फेलू की टोली ऊँट पर सवार होकर दौड़ते-दौड़ते आ रही है और वहाँ से गुज़रनेवाली रेलगाड़ी को रुकवाने की कोशिश करती है– तो क्या मेरी पसंद का यह दृश्य फिल्म में नहीं रह पाएगा?

उसी दिन मैंने रेलवे-अधिकारियों से मुलाकात की और उन्हें पूरा मामला समझाया। हमारा सौभाग्य था कि वे मान गए। एक पूरी रेलगाड़ी हमें दे दी गई जिसमें थर्ड क्लास, फस्ट क्लास मिलाकर कुल छह डिब्बे थे। इसके अलावा गार्ड का डिब्बा, कोयला ले जाने के लिए एक डिब्बा और इंजन भी था। तय हुआ कि इसके लिए कोयले का खर्च हमें देना होगा। सच कहूँ तो अभिशाप हमारे लिए वरदान हो गया क्योंकि यह रेलगाड़ी एक तरह से हमारे कब्जे में थी– हम इसे आगे-पीछे ले जाएँ, रोकें, चलाएँ जो मर्ज़ी कर सकते थे।

ऊँटों का दल वहाँ पहले से ही मौजूद था। केवल रेलगाड़ी के आने का इंतज़ार था। आसमान को देखकर लगा कि कल की गड़बड़ी एक बार फ़िर वरदान साबित हुई। आज सफ़ेद और मटमैले बादलों के टुकड़े आसमान में छाए हुए थे और उनके बीच से सुनहली धूप मरुस्थल पर पड़ रही थी। किसी नाटकीय दृश्य के लिए ऐसी रोशनी बहुत ज़रूरी थी।

आज रेलगाड़ी भी एकदम समय पर आ

पहुँची थी। उसके आने तक सभी का दिल धक-धक कर रहा था क्योंकि कल सुबह हमें जैसलमेर छोड़कर जोधपुर जाना था। छुक-छुक की आवाज़ सुनकर सभी ने एकसाथ राहत की साँस ली।

रेलगाड़ी के रुकते ही हमने ड्राईवर को सारा मामला समझा दिया। उसे एक चौथाई मील पीछे लौटना होगा और वहाँ से रेलगाड़ी फिर हमारी तरफ़ आएगी। हम समय के अंदाज़ से सवारी सहित ऊँटों के दल को रवाना कर देंगे। कैमरा खुली जीप में रखा होगा और पक्की सड़क पर जीप को ऊँटों के दल के साथ रेलगाड़ी की ओर दौड़ाया जाएगा।

ड्राइवर को हमने सबकुछ समझा दिया था। लेकिन एक बात बताना भूल गए। उसका नतीजा यह रहा...। रेलगाड़ी आ रही थी, ऊँट भी चल दिए थे। कैमरा भी दौड़ रहा था। जैसे ही गाड़ी ऊँटों के दल के नज़दीक आई तो फेलू ने अपनी जेब से रूमाल निकालकर हिलाना शुरू कर दिया। इतने में ड्राइवर ने खच्च से ब्रेक लगाया और गाड़ी रुक गई। ड्राइवर से कारण पूछा तो उसने कहा, " बाबु ने ही तो रुकने का इशारा किया था।" क्या करते! गलती तो हमारी ही थी। रेलगाड़ी को, ऊँटों को, फेलू, तोपसे, लालमोहन को, जीप, कैमरा सबको एक-चौथाई मील पीछे ले जाया गया। इस बार निश्चित ही कोई गड़बड़ी नहीं होनी थी।

रेलगाड़ी ने चलना शुरू किया। जब वह पहुँचने ही वाली थी ऊँटों के दल को इशारा कर दिया गया। जीप को धकेलने के लिए सब लोग कतार में खड़े थे। अचानक सबके पसीने छूट गए।

कैमरा चालू करने के लिए "स्टार्ट" बोलने ही वाला था कि जुबान अटक गई। रेलगाड़ी तो आ रही थी, मगर धुआँ कहाँ था? इस मरुप्रदेश के विशाल आसमान में रेलगाड़ी का काला धुआँ फैल रहा है- अगर ऐसा न हो तो दृश्य जमेगा कैसे? रोको-रोको, गाड़ी रोको, ऊँट रोको, जीप रोको! हमारी टोली के सभी लोग रेलगाड़ी की ओर दौड़ पड़े, रोको, रोको! रेलगाड़ी ने खच्च से फिर ब्रेक लगाया।

असल में स्टोकर बाबू शूटिंग देखने के लिए इतने उत्सुक थे कि बॉयलर में कोयला डालना ही भूल गए थे। धुआँ कहाँ से निकलता? इस बार कोयला देना ही होगा। अब अगर गलती हुई तो सुधार की गुँजाइश न रहेगी क्योंकि तब तक सूरज ढ़ल चुका होगा। स्टोकर की मर्जी पर भरोसा न करके इस बार हमने अपने एक आदमी को इंजिन में बिठा दिया।

फेलू, तोपसे और जटायु ऊँट पर सवार होकर तय स्थान पर खड़े हो गए। तीन बार शोट लेने का फायदा यह हुआ कि सवारों को दम निकल जाने का अभिनय नहीं करना पड़ेगा। जटायू की हालत तो ऐसी थी कि किसी तरह जान छूटे।

तीसरी बार दृश्य सही तरह से फिल्मा लिया गया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि उस दिन का काम खत्म हुआ। आज रात को दस बजे दुबारा इस रेलगाड़ी की ज़रूरत होगी। रामदेवरा स्टेशन का दृश्य! आधी रात को जैसलमेर जानेवाली गाड़ी आती है। फेलू, तोपसे और लालमोहन उसमें चढ़ते हैं और...

यह एक और ही अध्याय है।

सत्यजीत राय

जन्म : 2 मई 1921, कोल्कत्ता

मृत्यु : 23 अप्रैल 1992

आप एक भारतीय फिल्म निर्देशक थे जिन्हें 20 वीं शताब्दी के सर्वोत्तम फिल्म निर्देशकों में गिना जाता है। आप की शिक्षा प्रेसिडेंसी कॉलिज और विश्वभारती विश्वविद्यालय में हुई। आपने अपने कैरियर की शुरुआत पेशेवर चित्रकार के रूप में की। आपकी पहली फिल्म 'पाथेर पांचाली' को कान फिल्मोत्सव में मिले 'सर्वोत्तम मनवीय प्रलेख' पुरस्कार को मिलाकर कुल 11 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। आप फिल्म निर्माण से संबंधित पटकथा लिखना, पार्श्वसंगीत लिखना, चलचित्रण, कला निर्देशन, संपादन, प्रचार सामग्री की रचना जैसे कई काम खुद ही करते थे। आपने कुल 37 फिल्में की हैं जिनमें फीचर फिल्में, वृत्तचित्र, और लघु फिल्में शामिल हैं।

■ पढ़ें,

डाइवर को हमने सबकुछ समझा दिया था। लेकिन एक बात बताना भूल गए। उसका नतीजा यह रहा...। रेलगाड़ी आ रही थी, ऊँट भी चल दिए थे। कैमरा भी दौड़ रहा था। जैसे ही गाड़ी ऊँटों के दल के नज़दीक आई तो फ़ेलू ने अपनी जेब से रूमाल निकालकर हिलाना शुरू कर दिया। इतने में ड्राइवर ने खच्च से ब्रेक लगाया और गाड़ी रुक गई। ड्राइवर से कारण पूछा तो उसने कहा, " बाबु ने ही तो रुकने का इशारा किया था।" क्या करते! गलती तो हमारी ही थी।

ऐसी भूल हर एक की ज़िंदगी में अक्सर होती है।
लिखें ऐसा एक अनुभव।

■ पढ़ें,

उसी दिन मैंने रेलवे-अधिकारियों से मुलाकात की और उन्हें पूरा मामला समझाया। हमारा सौभाग्य था कि वे मान गए।

लेखक और रेलवे अधिकारी के बीच की संभावित बातचीत लिखें।

■ पढ़ें,

- **उसे एक चौथाई मील पीछे लौटना होगा और वहाँ से रेलगाड़ी फिर हमारी तरफ़ आएगी।**
- **हम समय के अंदाज़ से सवारी सहित ऊँटों के दल को रवाना कर देंगे।**

रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें।
ये शब्द क्रिया के किस समय की सूचना देते हैं?
चर्चा करें।

■ पढ़ें,

- फेलु, तोपसे, लालमोहन को वहीं रुके रहना <u>पड़ता है</u>।
- मजबूरन उन्हें रामदेवरा के लिए ऊँटों से ही रवाना होना <u>पड़ता है</u>।
- इसे फिल्माने के लिए हमें क्या-क्या न करना <u>पड़ा था</u>।

रेखांकित शब्द किसकी सूचना देते हैं?

चर्चा करें।

■ इस प्रकार के अन्य वाक्य चुनकर लिखें।

-
-
-

संजय भारती

आप एक भाषा को उसकी तमाम बारीकियों के साथ उठाकर दूसरी भाषा में ले आनेवाले कुशल अनुवादक हैं। यह काम आप इतने करीने से करते हैं कि अनुवाद मूल भाषा का जुड़वाँ लगता है। इसके अलावा आप बच्चों और बूढ़ों के लिए विभिन्न विधाओं में लिखते रहे हैं। संगीत, नृत्य और लंबे पैदल घूमना आपके शौक हैं। अब आप भारतीय रेल्वे में कार्यरत हैं।

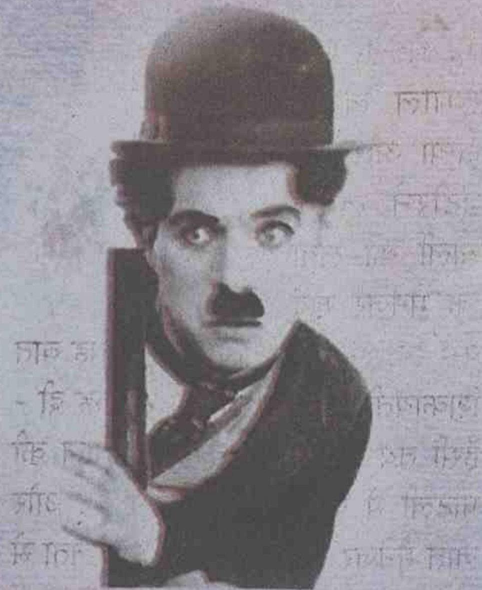

मुझे बारिश में चलना पसंद है, मेरे आँसू जो नहीं देख पाता है कोई!

चैप्लिन

सबसे बड़ा शो मैन

गीत चतुर्वेदी

गाते-गाते अचानक माँ की आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में तब्दील हो गई। लोगों को लगा कि माइक में कुछ ख़राबी आ गई है, पर फुसफुसाहट ज़ारी थी। लोग चिल्लाने लगे। कहीं से कुछ लोग म्याऊं-म्याऊं की आवाज़ निकालने लगे। इस अभद्र शोर ने माँ को स्टेज से हटने को मज़बूर कर दिया।

'इस अभद्र शोर ने माँ को स्टेज से हटने को मज़बूर कर दिया।'--उस समय माँ की हालत कैसी होगी?

चार्ली को वह अक्सर अपने साथ थिएटर ले जाती थी। उस दिन भी परदे के पीछे खड़ा वह आवाज़ के तमाशे को देख रहा था। माँ और मैनेजर में बहस होते देख वह वहाँ गया। मैनेजर ने चार्ली को माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते देखा था और वह उसे स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा। माँ डर गई। पाँच साल का बच्चा इस उग्र भीड़ को झेल पाएगा!

बहुत मुबाहिस के बाद वह अंततः चार्ली को स्टेज पर ले गया और बचाव के कुछ शब्द कह उसे अकेला छोड़ आया। धुएँ के उड़ते हुए छल्लों के बीच चार्ली ने मशहूर गीत *जैक जोन्स* गाना शुरू किया। कुछ देर तक आर्केस्ट्रा वाले उसकी आवाज़ में उस गाने की धुन तलाशते रहे और वह जैसे ही मिली, गाना सजने लगा।

पाँच साल का चार्ली स्टेज पर अकेला था— उस समय चार्ली ने क्या सोचा होगा?

गाना अभी आधा ही हुआ था कि स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई। चार्ली ने गाना रोक दिया और घोषणा की कि पहले मैं ये पैसे बटोरूँगा और उसके बाद ही गाऊँगा। इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया। तब

तक मैनेजर एक रूमाल लेकर आया और पैसे बटोरने लगा। चार्ली को लगा कि मैनेजर खुद पैसे रख लेना चाहता है। उसने यह बात शिकायती लहजे में दर्शकों से कह दी - हँसी तब और बढ़ गई जब रूमाल की पोटली में पैसे बांध बैकस्टेज की ओर जाते मैनेजर के पीछे चार्ली व्याकुलता से लग गया। जब तक मैनेजर ने वह पोटली माँ के हवाले नहीं की, वह नहीं लौटा।

'इस खेल ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया' - क्यों?

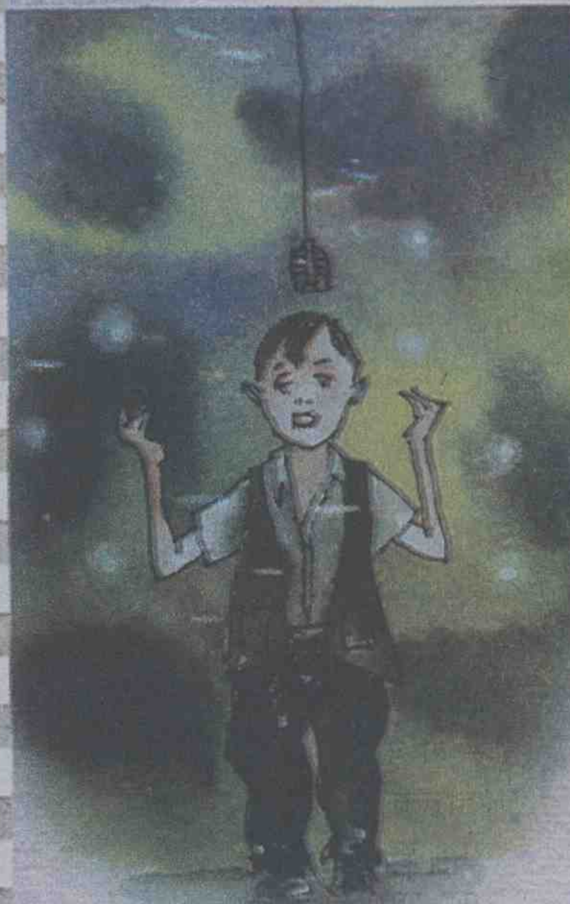

चार्ली ने जनता में गुदगुदी फैला दी थी। उसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी। मासूमियत में उसने थोड़ी देर पहले फटी माँ की आवाज़ और उसके फुसफुसाने की भी नकल उतार दी। लोगों में ठहाकों की हिस्सेदारी हुई और स्टेज पर जमकर पैसे बरसे। अंत में माँ जब उसे लेने आई तो दर्शकों ने देर तक खड़े होकर तालियाँ बजाई। कई लोगों ने माँ से हाथ मिलाकर उसके छोटे बच्चे की तारीफ़ की। चार्ली स्टेज पर पहली बार आया और माँ आख़िरी बार...

दुनिया के सबसे बड़े शो मैन का यह पहला शो था।

उसने जन्म ले लिया था।

'उसने जन्म ले लिया था।' इससे क्या मतलब है?

■ 'दुनिया के सबसे बड़े शो मैन का यह पहला शो था।'

इस घटना पर एक रपट तैयार करें।

ध्यान दें

> रपट वस्तुनिष्ठ हो।
>
> - रपट क्या, कौन, कब, कैसे, कहाँ आदि प्रश्नों के उत्तर देने लायक हो।
>
> रपट में लेखक का अपना दृष्टिकोण प्रकट हो।
>
> शीर्षक आकर्षक हो।

■ पढ़ें,

- लोग चिल्लाने लगे।
- कहीं से कुछ लोग म्याऊं-म्याऊं की आवाज़ निकालने लगे।
- वह उसे स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा।
- मैनेजर एक रुमाल ले कर आया और पैसे बटोरने लगा।

रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें और पहचानें इन शब्दरूपों में समानता कहाँ है? चर्चा करें।

■ अनुबद्ध कार्य

- चार्ली चैप्लिन पर एक विशेषांक निकालें।

चार्ली चैप्लिन

सर चार्लस स्पेनसर चैप्लिन का जन्म 16 अप्रैल1889 को हुआ। चैप्लिन विश्व के बड़े कलाकारों में एक है। वे एक हास्य अभिनेता, फिल्म निदेशक, संगीतज्ञ, फिल्म निर्माता आदि के रूप में मशहूर थे। अमेरिकी सिनेमा के क्लासिकल हॉलीवूड युग के प्रारंभ से मध्य तक उनका योगदान रहा। एक शिशु कलाकार से लेकर 88 वर्ष की आयु तक वे इस क्षेत्र में सक्रिय थे। 25 दिसंबर 1977 को इस महान कलाकार का निधन हुआ। उनकी मॉडेन टाईमस, दि ग्रैट डिटेक्टर, दि किड, सिटी लाईटस, दि सरकस आदि कई फिल्में विश्व भर के लोग अध्ययन और मनोरंजन के लिए देखते हैं।

गीत चतुर्वेदी

गीत चतुर्वेदी का जन्म 27 नवंबर 1977 को मुंबई में हुआ था। आप कवि हैं, जीवनीकार भी। अब आप 'दैनिक भास्कर' नोएडा के संपादकीय विभाग में कार्यरत हैं।

अनुबद्ध कार्य

चार्ली चैप्लिन और सत्यजीत रे- दोनों की फिल्म की शैली अलग-अलग है। दोनों की फिल्मों के फेस्टिवैल का आयोजन करें।

फ़िल्मी गीत

नीली आसमानी छतरी...

कू कू कू कू ...
कू कू कुड़ी कू कू ...
अरे हे हे रे नीली आसमानी छतरी
कु कू कुड़ी कु कू...
हे हे रे नीली आसमानी छतरी
छतरी का उड़न खटोला, डोले तो लागे हिंडोला
उड़े कभी, भागे कभी, भागे कभी, उड़े कभी
समझ ना मानी छतरी
कू कू कुड़ी कू कू ...

अंबर का टुकड़ा तोड़ा, लकड़ी का हत्ता जोड़ा
हाथ में अपना आसमान है रे
छतरी लेके चलती हूँ, मेमो जैसी लगती हूँ
गोरों का दिल बेईमान है रे
छड़ी कभी, लाठी कभी, लाठी कभी, छड़ी कभी
बड़ी शैतान छतरी
कू कू कुड़ी कू कू...

बारिश से जो रिशता है पानी पे मन खिंचता है
बिजली को ये पहचान है रे
शायद फिर उड़ ना जाए
अंबर से जुड़ना चाहे
भोली है अनजानी है... है... रे...
डूबे कभी, तैरे कभी, गोते खाती जाए कभी
करे नादानी छतरी

कू कू कुड़ी कू कू ...
हे हे रे नीली आसमानी छतरी
छतरी का उड़न खटोला, डोले तो लागे हिंडोला
उड़े कभी, भागे कभी, भागे कभी, उड़े कभी
समझ ना मानी छतरी

दृश्याभास करें।

ऊँट बनाम रेलगाड़ी

अंदाज़ा	- अनुमान
इंतज़ाम	- प्रबंध
ऊबड़-खाबड़	- ऊँचा-नीचा, असमान
कंटीली	- कांटों से भरी
कब्जे में	- नियंत्रण में
काफिला	- संघ (यात्रियों का संघ)
कुदाल	- കുന്താലി,തൂമ്പ pick axe, மரம்வெட்டி ಗುದ್ದಲಿ ಪಿಕ್ಕಾಸು
कोयला	- കൽക്കരി, நிலக்கரி, **coal**
झमेला	- കുഴപ്പം, குழப்பம், **problem**
झाड़ियाँ	- കുറ്റികാടുകൾ, குற்றிக்காடுகள், புதர், **bushes**
झालर	- തോരണം, தோரணம், ತೋರಣ
नतीजा	- फल, परिणाम
नशेड़िया	- ഉന്മത്തനായ, மதிமயங்கிய ನಶೆ ಏರು
पसली	- വാരിയെല്ല് rib, விலா எலும்பு, ಪಕ್ಕೆಲುವು
फबना	- ഇണങ്ങുക, യോജിക്കുക, இணங்கு ಒಪ್ಪು
मज़बूरन	- നിവൃത്തിയില്ലാതെ, வேறு வழியில்லாமல் ನಿರ್ವಾಹವಿಲ್ಲದ
मदहोश	- नशेड़िया
मर्जी	- इच्छा
मामला	- बात

मुलाकात - भेंट
मौजूद - हाज़िर
रूह - अंतःकरण
रेगिस्तान - മരുഭൂമി, பாலைவனம், **desert**
हिंडोला - ഊഞ്ഞാൽ, തൊട്ടിൽ, ஊஞ்சல், தொட்டில்
ಉಯ್ಯಾಲೆ ತೊಟ್ಟಿಲು

चार्ली चैप्लिन

अभद्र - അശുഭകരമായ अहित (अशुभ) - நல்லதல்லாத
गुदगुदा फैलाना - उमंग/पुलक/उल्लास
छल्ला - ഗോളാകൃതിയിലുള്ള വസ്തു - கோளவடிவம்
ज़िद - हठ നിർബന്ധം - கட்டாயம்
झेलना - സഹിക്കുക - பொறு
ठहाका - അട്ടഹാസം - அட்டகாசம்
तब्दील होना - परिवर्तित होना, बदलना
तारीफ़ करना - प्रशंसा करना
धुन - स्वर के आरोह - अवरोह का विशेष ढंग।
फुसफुसाहट - मंद स्वर में कहना നേരിയ ശബ്ദത്തിൽ പറയുക
Whisphering-மெல்லிய ஓசையுடைய
बहस - वाद-विवाद
बौछार - भरमार നിറയെ - கூடுதல், நிறைய
मासूमियत - നിഷ്കളങ്കം, നിരപരാധിത്വം - களங்கமற்ற/குற்றமற்ற
मुबाहिस - बहस/तर्क-वितर्क
लहजा - बोलने का ढंग
हवाले करना - കൈവശം കൊടുക്കുക - ஒப்படைத்தல்
हिस्सेदारी - പങ്കാളിത്തം - பங்களிப்பு

नीली आसमानी छतरी

उड़न खटोला	- उड़नेवाली खाट
गोता खाना	- डूबना
नादानी	- मूर्खता
हत्था	- मूठ
हिंड़ोला	- झूला

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्रवाचन करता है और आशय प्रस्तुत करता है।
- संस्मरण पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- अपना अनुभव लिखकर प्रस्तुत करता है।
- भविष्यत काल के वाक्यों की विशेषता पहचानता है और चुनकर लिखता है।
- जीवनी का अंश पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- किसी घटना पर रपट तैयार करता है।
- 'लग' सहायक क्रिया का प्रयोग समझता है और ऐसे वाक्यों को चुनकर लिखता है।

इकाई 3

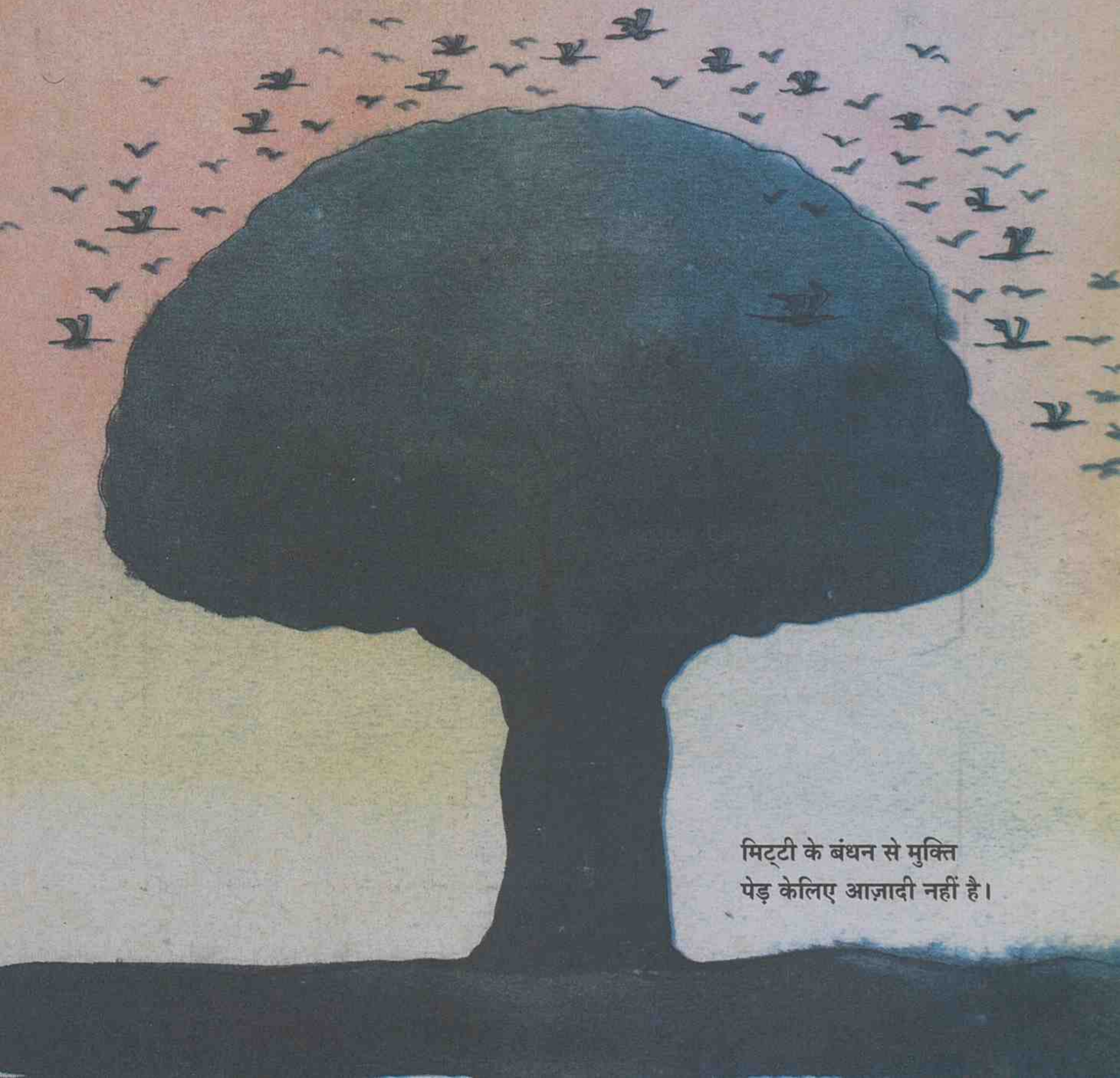

अकाल और उसके बाद

नागार्जुन

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद

■ **पढ़ें और चर्चा करें,**

- कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
  कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

  चूल्हे का रोना और चक्की का उदास होना- इसका मतलब क्या है?

- कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
  कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

  ये पंक्तियाँ किस हालत की ओर इशारा करती हैं?

- दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
  धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद

  इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहता है ?

■ **कवि ने अकाल का चित्रण किस प्रकार किया है? चर्चा करें,**

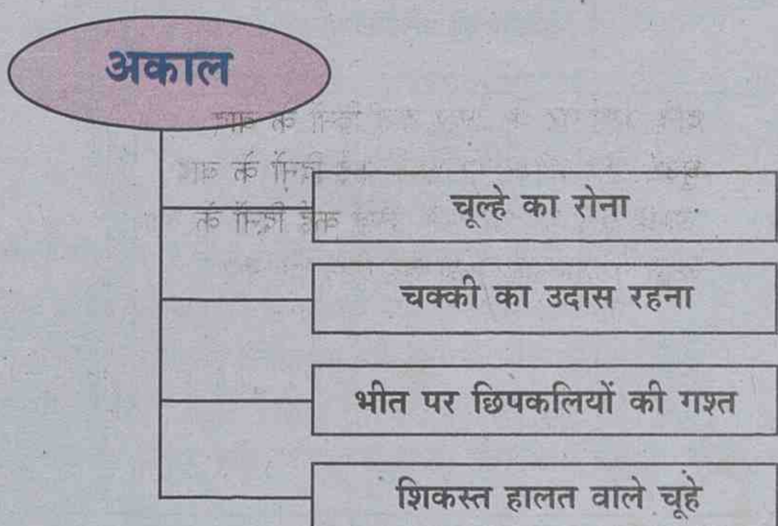

■ कवि ने अकाल के बाद की हालत का चित्रण किस प्रकार किया है? चर्चा करें,

अकाल के बाद

- घर के अंदर दाने का आना
- आँगन के ऊपर धुएँ का उठना
- घर भर की आँखों का चमक उठना
- कौए के पंखों का खुजलाना

■ चर्चा करें,

कविता में 'कई दिनों तक' और 'कई दिनों के बाद' दुहराने का तात्पर्य क्या हो सकता है?

कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लिखें।

नागार्जुन

जन्म : 30 जून 1911, बिहार
मृत्यु : 5 नवंबर 1998

आप हिंदी के प्रगतिशील साहित्यकार हैं। आपने हिंदी के अलावा मैथिली, संस्कृत और बंगला में भी रचनाएँ की हैं। लोकजीवन, प्रकृति और समकालीन राजनीति आपकी रचनाओं के मुख्य विषय रहे हैं। 'युगधारा','प्यासी पथराई आँखें','सतरंगी पंखोंवाली','तालाब की मछलियाँ' आदि आपकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं।

ठाकुर का कुआँ

प्रेमचंद

जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो पानी में सख्त बदबू आई। गंगी से बोला-यह कैसा पानी है? मारे बास के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा पानी पिलाए देती है!

गंगी प्रतिदिन शाम पानी भर लिया करती थी। कुआँ दूर था, बार-बार जाना मुश्किल था। कल वह पानी लाई, तो उसमें बू बिलकुल न थी, आज पानी में बदबू कैसी! लोटा नाक से लगाया, तो सचमुच बदबू थी। ज़रूर कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा, मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से?

ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? दूर से लोग डाँट बताएँगे। साहू का कुआँ गाँव के उस सिरे पर है, परंतु वहाँ भी कौन पानी भरने देगा? कोई तीसरा कुआँ गाँव में है नहीं।

जोखू कई दिन से बीमार है। कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पड़ा रहा, फिर बोला- अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जाता। ला, थोड़ा पानी नाक बंद करके पी लूँ।

ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? गंगी क्यों इस प्रकार सोचती है?

गंगी ने पानी न दिया। खराब पानी से बीमारी बढ़ जाएगी इतना जानती थी, परंतु यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है। बोली- "यह पानी कैसे पिओगे? न जाने कौन जानवर मरा है। कुएँ से मैं दूसरा पानी लाए देती हूँ।"

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा- "पानी कहाँ से लाएगी?"

"ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं। क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे?"

"हाथ-पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण-देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगें, साहूजी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है! हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?"

इन शब्दों में कड़वा सत्य था। गंगी क्या जवाब देती, किंतु उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया।

रात के नौ बजे थे। थके-मांदे मज़दूर तो सो चुके थे, ठाकुर के दरवाज़े पर दस-पाँच बेफिक्रे जमा थे। मैदानी बहादुरी का तो अब न ज़माना रहा है, न मौका। कानूनी बहादुरी की बातें हो रही थीं। कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक खास मुकदमे में रिश्वत दी और साफ़ निकल गए। कितनी अक्लमंदी से एक मार्के के मुकदमे की नकल ले आए। नाज़िर और मोहतमिम, सभी कहते थे, नकल नहीं मिल सकती। कोई पचास माँगता, कोई सौ। यहाँ बेपैसे-कौड़ी नकल उड़ा दी। काम करने का ढंग चाहिए।

मैदानी बहादुरी का तो अब न ज़माना रहा है, न मौका।
-इसका क्या मतलब है?

इसी समय गंगी कुएँ से पानी लेने पहुँची।

कुप्पी की धुँधली रोशनी कुएँ पर आ रही थी। गंगी जगत की आड़ में बैठी मौके का इंतज़ार करने लगी। इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है। किसीके लिए रोक नहीं, सिर्फ़ ये बदनसीब नहीं भर सकते।

गंगी का विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा– हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं? यहाँ तो जितने हैं, एक-से-एक छंटे हैं। चोरी ये करें, जाल-फरेब ये करें, झूठे मुकदमे ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़रिए की भेड़ चुरा ली थी और बाद में मारकर खा गया। इन्हीं पंडित के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहू जी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, मजूरी देते नानी मरती है। किस-किस बात में हमसे ऊँचे हैं, हम गली-गली

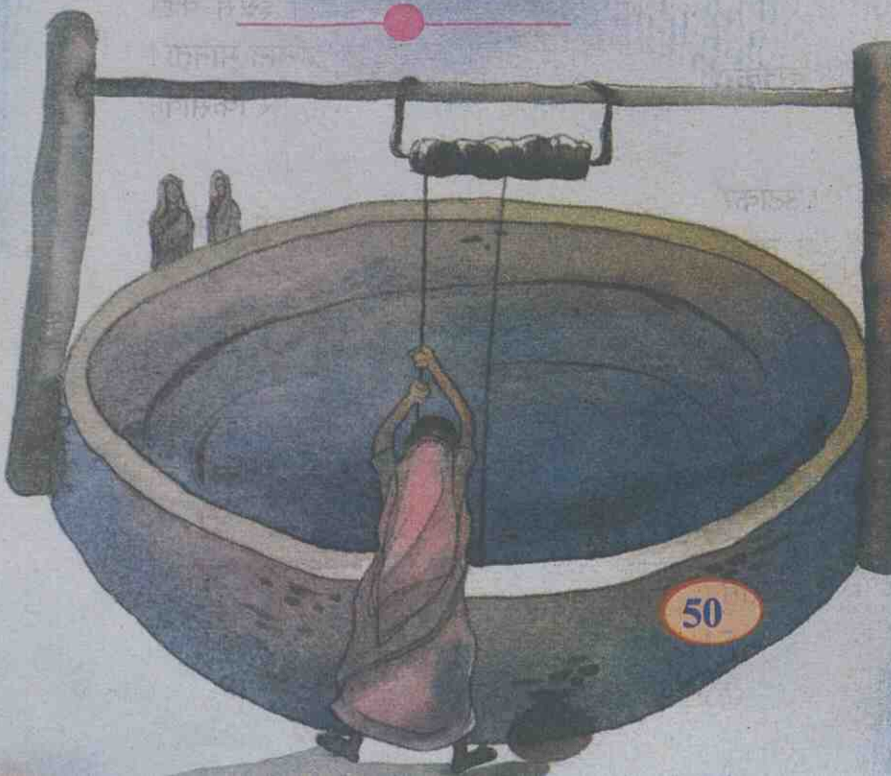

चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे हैं, हम ऊँचे। कभी गाँव में आ जाती हूँ, तो रस-भरी आँख से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर साँप लोटने लगता है, परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं!

कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई। गंगी की छाती धक-धक करने लगी। कहीं देख लें तो गजब हो जाय। एक लात भी तो नीचे न पड़े। उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अंधेरे साये में जा खड़ी हुई। कब इन लोगों को दया आती है किसी पर! बेचारे महँगू को इतना मारा कि महीनों लहू थूकता रहा। इसीलिए तो कि उसने बेगार न दी थी। इस पर ये लोग ऊँचे बनते हैं?

कुएँ पर स्त्रियाँ पानी भरने आई थीं। इनमें बात हो रही थीं।

'खाना खाने चले और हुक्म हुआ कि ताज़ा पानी भर लाओ। घड़े के लिए पैसे नहीं हैं।'

'हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मरदों को जलन होती है।'

'हाँ, यह तो न हुआ कि कलसिया उठाकर भर लाते। बस, हुकुम चला दिया कि ताज़ा पानी लाओ, जैसे हम लौंडियाँ ही तो हैं।'

'लौंडियाँ नहीं तो और क्या हो तुम? रोटी-कपड़ा नहीं पातीं? दस-पाँच रुपये भी छीन-झपटकर ले ही लेती हो। और लौंडियाँ कैसी होती हैं!'

'मत लजाओ, दीदी! छिन-भर आराम करने को जी तरसकर रह जाता है। इतना काम किसी दूसरे के घर कर देती, तो इससे कहीं आराम से रहती। ऊपर से वह एहसान मानता! यहाँ काम करते-करते मर जाओ; पर किसीका मुँह ही सीधा नहीं होता।'

दोनों पानी भरकर चली गईं, तो गंगी वृक्ष की छाया से निकली और कुएँ की जगत के पास आई। बेफिक्रे चले गए थे। ठाकुर भी दरवाज़ा बंद कर अंदर आँगन में सोने जा रहे थे। गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली। किसी तरह मैदान तो साफ़ हुआ। अमृत चुरा लाने के लिए जो राजकुमार किसी ज़माने में गया था, वह भी शायद इतनी सावधानी के साथ और समझ-

बूझकर न गया हो। गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढ़ी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले न हुआ था।

'गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढ़ी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले न हुआ था।' गंगी को ऐसा अनुभव क्यों हुआ होगा?

उसने रस्सी का फंदा घड़े में डाला। दाएँ-बाएँ चौकन्नी दृष्टि से देखा जैसे कोई सिपाही रात को शत्रु के किले में सुराख कर रहा हो। अगर इस समय वह पकड़ ली गई, तो फिर उसके लिए माफ़ी या रियायत की रत्ती-भर उम्मीद नहीं। अंत में देवताओं को याद करके उसने कलेजा मज़बूत किया और घड़ा कुएँ में डाल दिया।

घड़े ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही आहिस्ता। ज़रा भी आवाज़ न हुई। गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे। घड़ा कुएँ के मुँह तक आ पहुँचा। कोई बड़ा शहजोर पहलवान भी इतनी तेज़ी से न खींच सकता था।

गंगी झुकी कि घड़े को पकड़कर जगत पर रखे कि एकाएक ठाकुर साहब का दरवाज़ा खुल गया। शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा।

'शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा।' यहाँ ठाकुर के दरवाज़े की तुलना शेर की मुँह से क्यों की गई है?

गंगी के हाथ से रस्सी छूट गई। रस्सी के साथ घड़ा धड़ाम से पानी में गिरा और कई क्षण तक पानी में हिलकोरे की आवाज़ें सुनाई देती रहीं।

ठाकुर 'कौन है, कौन है?' पुकारते हुए कुएँ की तरफ़ आ रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी।

घर पहुँचकर देखा कि जोखू लोटा मुँह से लगाए वही मैला-गंदा पानी पी रहा है।

ये प्रसंग देखें,

- गंगी क्या जवाब देती, किंतु उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया।
- उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अंधेरे साये में जा खड़ी हुई।
- ठाकुर 'कौन है, कौन है?' पुकारते हुए कुएँ की तरफ़ आ रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी।

इन व्यवहारों से गंगी के कौन-कौन से मनोभाव प्रकट होते हैं?

चर्चा करें।

गंगी के ये विचार पढ़ें,

- ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? दूर से लोग डाँट बताएँगे।
- कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक खास मुकदमे में रिश्वत दी और साफ़ निकल गए। कितनी अक्लमंदी से एक मार्के की मुकदमे की नकल ले आए।
- हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं? इसलिए कि ये लोग गले में ताग डाल लेते हैं? यहाँ तो जितने हैं एक-से-एक छंटे हैं।

इन विचारों में गंगी के कौन-कौन से दृष्टिकोण प्रकट होते हैं?

चर्चा करें।

- गंगी के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

- संगोष्ठी चलाएँ।

'जाति प्रथा एक अभिशाप है'
-विषय पर आलेख तैयार करें और संगोष्ठी चलाएँ।

प्रेमचंद

जन्म : 31 जुलाई 1880
निधन : 8 अक्तूबर 1936

आप हिंदी और उर्दू के महान भारतीय लेखकों में से एक हैं। आप एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक तथा कुशल वक्ता थे। आपने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, संपादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य सृष्टि की। उपन्यासों के क्षेत्र में आपके बहुमूल्य योगदान के कारण आप 'उपन्यास सम्राट' पुकारे जाते हैं। सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला; कायाकल्प, गबन; कर्मभूमि, गोदान आदि आपके उपन्यास हैं।

कहानी

एक थाल चाँद भरा...

-अनंत गंगोला

वह ठंड का एक दिन था। मैं खेत सिंह के आँगन में बैठा अलाव ताप रहा था। उसके तीनों बच्चे वहीं पास में खेल रहे थे। उन्हें भूख लग रही थी सो बीच-बीच में गाते जाते थे, "माँ खाना दे, माँ खाना दे...।' माँ खेत सिंह के आने की बाट जोह रही थी। वह बोली, "रुक जाओ, तुम्हारे बाबा गट्ठा बेचने शहर गए हैं। वह कुछ लाएँगे, उसीसे खाना बनेगा। घर में कुछ नहीं है।" बच्चे फिर खेल में लग गए। भूख तेज़ लगी तो, "माँ खाना दे, माँ खाना दे..." तेज़-तेज़ और जल्दी-जल्दी गाने लगे। माँ बड़े पसोपेश में थी कि करे तो क्या करे?

बच्चों का ध्यान बँटे यह सोचकर माँ ने कहा, "आँगन में पट्टी बिछाओ और थाली लेकर बैठ जाओ।" माँ की यह तरकीब भी बहुत देर तक काम न आई। अब तक बच्चे अधीर होकर थाली बजाते हुए गाने लगे थे, "माँ खाना दे... माँ खाना दे...।" माँ अंदर गई और सुबह के खाने की हाँड़ी खुरचने लगी। फिर बाहर आकर तीनों थालियों में थोड़ी-थोड़ी खुरचन परोस दी।

तीसरी थाली में लगभग कुछ न था। बच्चा बोला, "माँ दे ना।" माँ बोली, "दिया तो। खा ना।" बच्चा बोला, "क्या खाऊँ? पूरी थाली में तो चंदा चमक रहा है।" माँ रुआँसी हो बोली, "क्या दूँ? तू तो चंदा को ही खा ले।"

माँ झोंपड़ी के पीछे जा रोने लगी। और आसमान में चंदा यह सब देखता रहा।

'खाना' विषय पर प्रदर्शनी चलाएँ।

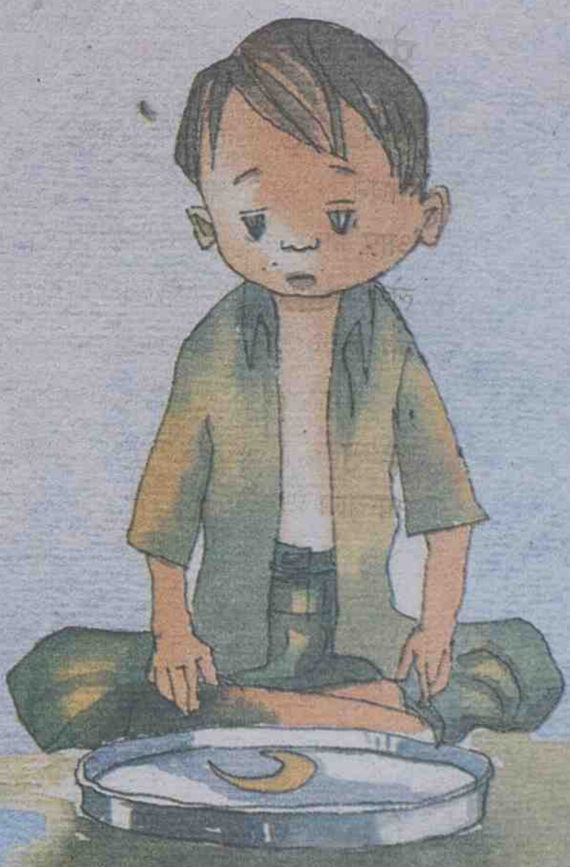

अनंत गंगोला

भारत में स्कूली शिक्षा को बेहतर, रुचिपूर्ण और सार्थक बनाने में अनंत गंगोला की खास दिलचस्पी रही है। आगरा के इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साईंसेस से समाज शास्त्र में एम फिल करने के बाद आप पी एच डी के शोध कार्य के लिए मध्य प्रदेश के आदिवासी गाँव नीलगढ़ गए। यहाँ उन्हें जीवन जीने की एक बिलकुल नई दृष्टि मिली। एक लंबे समय तक उन्हीं के साथ रहकर उन्होंने उनकी शिक्षा, साक्षरता व सामाजिक उत्थान के लिए काम किए।

मदद लें...

अकाल और उसके बाद

अकाल	-	ക്ഷാമം - வறட்சி
कानी कुतिया	-	ഒറ്റക്കണ്ണുള്ള നായ - ஒற்றைக்கண்ணுடைய நாய்
खुजलाना	-	ചൊറിയുക - சொறிவது
गश्त	-	ഉലാത്തൽ - உலவுவது, patrol
चूल्हा	-	അടുപ്പ് - அடுப்பு
छिपकली	-	പല്ലി - பல்லி, lizard
पाँख	-	पंख
भीत	-	दीवार
शिकस्त	-	पराजय

ठाकुर का कुआँ

अक्लमंदी	- cleverness - புத்திக்கூர்மையுடைய ಜಾಣ
आहट	- കാലൊച്ച - காலடியோசை ಕಾಲಸಪ್ಪಳ
आहिस्ता	- धीरे-धीरे
उबालना	- തിളപ്പിക്കുക to boil - கொதிக்கவை ಕುದಿಸು
एहसान	- आभार നന്ദി - நன்றி ಧನ್ಯವಾದ
कंधा देना	- സഹായിക്കുക to help - உதவு ಸಹಾಯಮಾಡು
कलसिया	- ചെറിയ കുടം छोटा कलश சின்னக்குடம் ಸಣ್ಣ ಕೊಡ
कुप्पी	- छोटा दीया വിളക്ക് - அகல் விளக்கு ಚರ್ಮದಿಂದ ಮಾಡಿದ ಉರುಟಾದ ಪಾತ್ರೆ
कौड़ी	- നാണയം - நாணயம் ನಾಣ್ಯ
खराबी	- बुराई
गजब	- विपदा, बड़ी हानि
गले में ताग डालना	- കഴുത്തിൽ ചരടണിയുക கழுத்தில் நூல் கட்டுவது ಕುತ್ತಿಗೆಗೆ ದಾರ ಹಾಕು
छंटना	- to keep away അകന്നു നടക്കുക - தள்ளி நட ದೂರವಾಗು
जुआ	- പണം വച്ചുള്ള ചൂതുകളി - பணம் வைத்து சூதாடுவது ಜೂಜಾಟ
ठाकुर	- ക്ഷത്രിയരുടെ ഒരു സ്ഥാനപ്പേര് क्षत्रियों की उपाधि - சத்திரியரின் ஒரு ஸ்தானப்பெயர் ಕ್ಷತ್ರಿಯರ ಬಿರುದು

तरस	-	കരുണ ദയ - கருணை ಕರುಣೆ
ताग	-	Tag डोरा ചരട് - சரடு ದಾರ
तुड़वाना	-	പൊട്ടിക്കുക to break - உடை ಒಡೆಯು
थके-मांदे	-	ക്ഷീണിച്ച tired - பலவீனமான ಸುಸ್ತು
दुआर पर झाँकना	-	പടിക്കലെത്തി നോക്കുക - வாசலில் எட்டிப் பார் ಬಾಗಿಲಿನಿಂದ ಇಣುಕು
धड़ाम	-	ധഡ് എന്ന ശബ്ദം/വീഴുന്ന ശബ്ദം - திடீர் என்ற சத்தம்/விழுந்த சத்தம் ಬೀಳುವ ಶಬ್ದ
धुँधला	-	മങ്ങിയ - மங்கலான் ಅಸ್ಪಷ್ಟ
नकल	-	പകർപ്പ് - பிரதி ನಕಲು
नाजिर	-	supervisor - பார்வையிடுபவர், கண்காணிப்பவர் ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕ
पाबंदी	-	സമയപാലനം punctuality நேரம் தவறாமை ಸಮಯನಿಷ್ಠೆ
फंदा	-	കുരുക്ക് - பொறி ಕುಣಿಕೆ
बदनसीब	-	ഭാഗ്യഹീനയായ unfortunate துரதிஷ்டவசமான ನತದೃಷ್ಟ
बेगार	-	കൂലിയില്ലാത്ത ജോലി बिना मज़दूरी के बलपूर्वक करवाया जानेवाला काम। கூலியில்லாத்த வேலை ಸಂಬಳ ಇಲ್ಲದ ಕೆಲಸ -
बेफिक्र	-	ചിന്തയില്ലാത്ത சிந்தனையில்லாமல் ನಿಶ್ಚಿಂತೆ
मजूरी करना	-	തൊഴിലെടുക്കുക வேலை செய் ಕೂಲಿಮಾಡು

मुकदमा	- case - நிகழ்தல்
मोहतमिम	- प्रबंधक
रिवाज़	- സമ്പ്രദായം நடைமுறை ಸಂಪ್ರದಾಯ
रिश्वत	- കൈക്കൂലി லஞ்சம் ಲಂಚ
लहू थूकना	- രക്തം തുപ്പുക ரத்தம் வடித்து ஒழுகுதல் ರಕ್ತಸ್ರಾವ
लात	- पैरों से किसी को मारना
लौंडी	- ദാസി பணிப்பெண் ದಾಸಿ
शहजोर	- अत्यंत बली
सख्त	- कठोर കഠിനമായ கடினமான ಕಠಿಣವಾದ
सड़ा	- मलिन
साँप छाती पर लोटना	- വളരെ പരിഭ്രമിക്കുക to be extremely shocked மிகுந்த அதிர்ச்சி ದಿಗ್ಭ್ರಾಂತನಾಗು
साहू	- ധനികനായ വ്യാപാരി rich merchant பணக்கார வியாபாரி ಶ್ರೀಮಂತ ವ್ಯಾಪಾರಿ
सुराख	- छेद
हाथ-पाँव तुड़वाना	- കൈയും കാലും തല്ലിയൊടിപ്പിക്കുക கை, கால், அடித்து நொறுக்குதல் ಕೈಕಾಲು ಮುರಿಯು
हिलकोर	- തിര/ഓളം - திரை அலை ತೆರೆ

एक थाल चाँद भरा

अलाव तापना	-	ഞെരിപ്പോടിൽ നിന്നും ചൂടേൽക്കുക, நெருப்போட்டிலிருந்து வெப்பம் ஏற்றல்
खुरचन	-	പാത്രത്തിൽ നിന്നും ചുരണ്ടിയെടുത്ത സാധനം - பாத்திரத்திலிருந்து சுரண்டியெடுத்த பொருள்
गट्ठा	-	തടി, പുല്ല് ഇവയുടെ കെട്ട് A load of wood or grass - தடி, புல் இவற்றின் கட்டு
तरकीब	-	ഉപായം - வழி
पसोपेश	-	ശങ്ക/ഒഴിഞ്ഞുമാറൽ - சந்தேகம்
बाट जोहना	-	കാത്തിരിക്കുക to await anxiously - காத்திருத்தல்
हाँड़ी खुरचना	-	മൺകലം ചുരണ്ടുക - மண்பாத்திரம் சுரண்டு

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्र का वाचन करता है और आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता पढ़ता है और आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता का विश्लेषण करता है और चर्चा में भाग लेता है।
- कविता पर टिप्पणी लिखता है।
- कहानी पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- सामाजिक विषय पर होने वाली चर्चा पर भाग लेता है।
- चरित्रगत विशेषताएँ लिखता है।
- संगोष्ठी के लिए आलेख तैयार करता है।
- संगोष्ठी में भाग लेता है।

इकाई 4

एक बार चलने का हौसला रखो,
मुसाफ़िरों का तो रास्ते भी इंतज़ार करते हैं।

बसंत मेरे गाँव का

मुकेश नौटियाल

मकर संक्रांति के बाद सूरज पंचाचूली के शिखरों से चौखंभा पर्वत की तरफ़ खिसकना शुरू कर देता है। दादी कहती थीं कि जेठ तक सूरज हर सुबह बालिश्त भर छलाँग मारता है। पंचाचूली से चौखंभा तक पहुँचने में सूरज को पूरे चार महीने का समय लग जाता है।

पंचाचूली की पाँच बर्फ़ानी चोटियों और चौखंभा के चार शिखरों के ऐन बीच में जो पहाड़ नज़र आ रहा है वह नंदा पर्वत है। सूरज पंचाचूली से खिसककर जब नंदा पर्वत तक पहुँचता है तो पहाड़ों में फ्यूंली के पीले फूल खिलने लगते हैं। पहाड़ी ढलानों पर खूबसूरती से कटे सीढ़ीनुमा खेतों में गेहूँ की हरियाली के बीच सरसों की पीलाई पसर जाती है। बसंत बौराने लगता है।

बसंत फूलदेई का त्यौहार लेकर आता है। देर शाम तक बच्चे फूल चुनते हैं। इन फूलों को रिंगाल (बाँस की एक प्रजाति) से बनी खास तरह की टोकरियों में रखा जाता है। टोकरियों को रात भर पानी से भरी गागरों के ऊपर रखा जाता है ताकि वो सुबह तक मुरझा न पाएँ। सुबह पौ फटते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं। पिछली शाम चुने गए फूल घरों की देहरियों पर सजाए जाते हैं। जिनके घरों में फूल सजाए जाते हैं वे बच्चों को चावल, गुड़, दाल आदि देते हैं। दक्षिणा में मिली यह सामग्री पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठा की जाती है। फूलदेई की विदाई के साथ बसंत का यह उत्सव समाप्त हो जाता है। अंतिम दिन इकट्ठी की गई सामग्री

से सामूहिक भोज बनाया जाता है। इस आयोजन में बड़ों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित होती है। बाकी सारे काम बच्चे करते हैं। उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई से बड़ा बच्चों का कोई दूसरा त्यौहार नहीं है।

> *उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई को बच्चों का सबसे बड़ा त्योहार मानते हैं। क्यों?*

उधर बच्चे फूलदेई के जश्न में शामिल होते हैं और इधर बड़े ढोल-ढमाऊ की थाप पर चैती गीत गाते हैं। इन गीतों में पांडवों की हिमालय यात्रा के किस्से होते हैं और पहाड़ के वीरों की शौर्य गाथाएँ भी शामिल होती हैं। परंपरागत रूप से चैती गीत गानेवाले औजी जब गाँव में धमकते हैं तो वहाँ भीड़ जम जाती है। बसंत में संगीत के सुर घुल जाते हैं।

बसंत की गुनगुनी धूप जब दोपहरी में तपाने लगती है तब ऊँचे हिमालय शिखरों पर बुराँस चटकने लगते हैं। बुराँस के फूल पहाड़ों पर शानदार लालिमा बिछा देते हैं। मकर संक्रांति से तपता सूरज अब नंदा पर्वत से चौखंभा पर्वत की ओर बढ़ने लगता है। गंगा में पानी की धारा तेज़ हो जाती है। ठंड के मौसम में बर्फ़ीले इलाकों से निचले इलाकों में उतरे पशुचारक वापस घरों को लौटने लगते हैं। महीनों तक फैले चरागाहों, घने जंगलों और अनजान बस्तियों में भटकने के बाद अपने घर लौटने की खुशी उत्सव का माहौल रच देती है। वे गीत गाते हैं, नाचते हैं। पशुचारकों के साथ उनकी भेड़-बकरियाँ, घोड़े-खच्चर और कुत्ते भी होते हैं। रास्ते में आनेवाले गाँवों से उनका लेन-देन भी होता रहता है। वे जानवरों के साथ-साथ कीड़ाजड़ी, करण और चुरु जैसी दुर्लभ हिमालयी

जड़ी व औषधियाँ भी बेचते हैं। इन गाँवों से इनका सदियों का रिश्ता है, इसीलिए उसी वक्त पूरी कीमत चुकाना ज़रूरी नहीं होता। बर्फ़ीले मौसम में निचले इलाकों की ओर जाते वक्त पुरानी वसूली की जाती है। मज़े की बात है कि नकद-उधार के आंकड़े कहीं दर्ज़ नहीं होते। आपसी विश्वास के दम पर वर्षों से यहाँ ये लेन-देन चल रहा है।

'आपसी विश्वास के दम पर वर्षों से यहाँ ये लेन-देन चल रहा है।' यहाँ गाँववालों की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?

पशुचारकों के जत्थे जब गुज़र जाते हैं तब गाँव की जड़ में बहती गंगा से सटकर बनी सर्पीली सड़क में हलचल बढ़ जाती है। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री की ओर आनेवाले पैदल यात्री धामों के कपाट खुलने से काफ़ी पहले आने लग जाते हैं। सुदूर दक्षिण से आनेवाले महात्मा कई बार हमारे गाँव तक आ जाते हैं। उनके हाथ में एकतारा होता है और उसके संगीत पर वे भजन गाते हैं। बद्रीनाथ और केदारनाथ के मुख्य पुजारी आज भी दक्षिण भारत से नियुक्त होते हैं।

सूरज जब चौखंभा पर्वत के ठीक पीछे से उदय होने लगता है तब जेठ शरू हो जाता है। पहाड़ की सड़कें गाड़ियों से भर जाती हैं। अपने घर की छत से जब मैं बद्रीनाथ यात्रा-मार्ग की भीड़ देखता हूँ तो भूल जाता हूँ कि महज दो महीने पहले यह घाटी एकदम शांत थी।

सदियों से यह ऋतु-चक्र यूँ ही चलता आ रहा है। हिमालय अपनी जगह मौजूद है और सूरज मुस्तैदी से अपनी यात्रा कर रहा है। पंचाचूली की पाँच चोटियों की ओर से जब सूरज प्रकट होता है तब मेरे गाँव में हाड़कँपा देनेवाली ठंड पड़ती है। सूरज जब चौखंभा के शिखर से उगता है तब जेठ की गर्मी चरम पर होती है। इन दोनों पर्वतों के बीच खड़े नंदा पर्वत के आसपास सूरज की उपस्थिति मेरे गाँव में बसंत के बौराने का प्रतीक है।

दादी कहती थीं- जब तक हिमालय रहेगा ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा।

'जब तक हिमालय रहेगा ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा।' इसका क्या तात्पर्य है?

■ प्रकृति वर्णन से युक्त वाक्य लेख से चुनकर लिखें। जैसे,

- मकर संक्रांति के बाद सूरज पंचाचूली के शिखरों से चौखंभा पर्वत की तरफ़ खिसकना शुरू कर देता है।
- बसंत की गुनगुनी धूप जब दोपहरी में तपाने लगती है तब ऊँचे हिमालय शिखरों पर बुराँस चटकने लगते हैं।

इन वाक्यों से प्राकृतिक सुंदरता के बारे में मन में कैसा चित्र उभर आता है? चर्चा करें।

■ प्रदत्त कार्य

यह विवरण पढ़ें,

बसंत फूलदेई का त्यौहार लेकर आता है। देर शाम तक बच्चे फूल चुनते हैं। इन फूलों को रिंगाल (बाँस की एक प्रजाति) से बनी खास तरह की टोकरियों में रखा जाता है। टोकरियों को रात भर पानी से भरी गागरों के ऊपर रखा जाता है ताकि वो सुबह तक मुरझा न पाएँ। सुबह पौ फटते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं। पिछली शाम चुने गए फूल घरों की देहरियों पर सजाए जाते हैं। जिनके घरों में फूल सजाए जाते हैं वे बच्चों को चावल, गुड़, दाल आदि देते हैं। दक्षिणा में मिली यह सामग्री पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठा की जाती है। फूलदेई की विदाई के साथ बसंत का यह उत्सव समाप्त हो जाता है। अंतिम दिन इकट्ठी की गई सामग्री से सामूहिक भोज बनाया जाता है। इस आयोजन में बड़ों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित होती है। बाकी सारे काम बच्चे करते हैं।

उपर्युक्त विवरण को चित्रों के ज़रिए प्रस्तुत करें। प्रत्येक चित्र के लिए शीर्षक दें।

■ हमारे यहाँ भी कई प्रकार के त्यौहार हैं। अपने इलाके के त्यौहार का वर्णन करते हुए एक लेख लिखें।

- प्रकृति सौंदर्य और पर्यावरण प्रदूषण पर आधारित वृत्त चित्र देखें।
  मनुष्य और प्रकृति के आपसी संबंध पर चर्चा करें।
  उपर्युक्त विषय पर पोस्टर तैयार करें।

- ये वाक्य पढ़ें,

> • बसंत फूलदेई का त्यौहार लेकर आता है।
> • देर शाम तक बच्चे फूल चुनते हैं।
> • सुबह पौ फटते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं।

रेखांकित शब्द क्रिया के किस समय को सूचित करता है?
चर्चा करें।

- ऐसे अन्य वाक्य लिखें।

•
•
•
•
•
•

यह वाक्य पढ़ें,

इन फूलों को रिंगाल से बनी खास तरह की टोकरियों में रखा जाता है।

- यहाँ फूलों को रिंगाल से बनी खास तरह की टोकरियों में किसके द्वारा रखा जाता है?

अब यह वाक्य पढ़ें,

बच्चे इन फूलों को रिंगाल से बनी खास तरह की टोकरियों में रखते है।

इन दोनों वाक्यों पर चर्चा करें।

- **पिछली शाम चुने गए फूल घरों की देहरियों पर सजाए जाते हैं।**
- **दक्षिणा में मिली यह सामग्री पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठी की जाती है।**

इन वाक्यों के वाच्य बदलकर लिखें।

मुकेश नौटियाल

जन्म : 4 जुलाई 1971, रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड

आप उत्तराखंड भाषा संस्था के सदस्य होने के साथ-साथ साहित्यिक पत्रिका, लोक गंगा आदि के सहायक संपादक भी हैं। आपकी कहानियों का संकलन 'चमकता रहेगा स्वीली गम' के नाम से प्रकाशित हुआ है। हिमालय की कहानियाँ आपका बालकथा-संग्रह है।

जैसलमेर

मिहिर

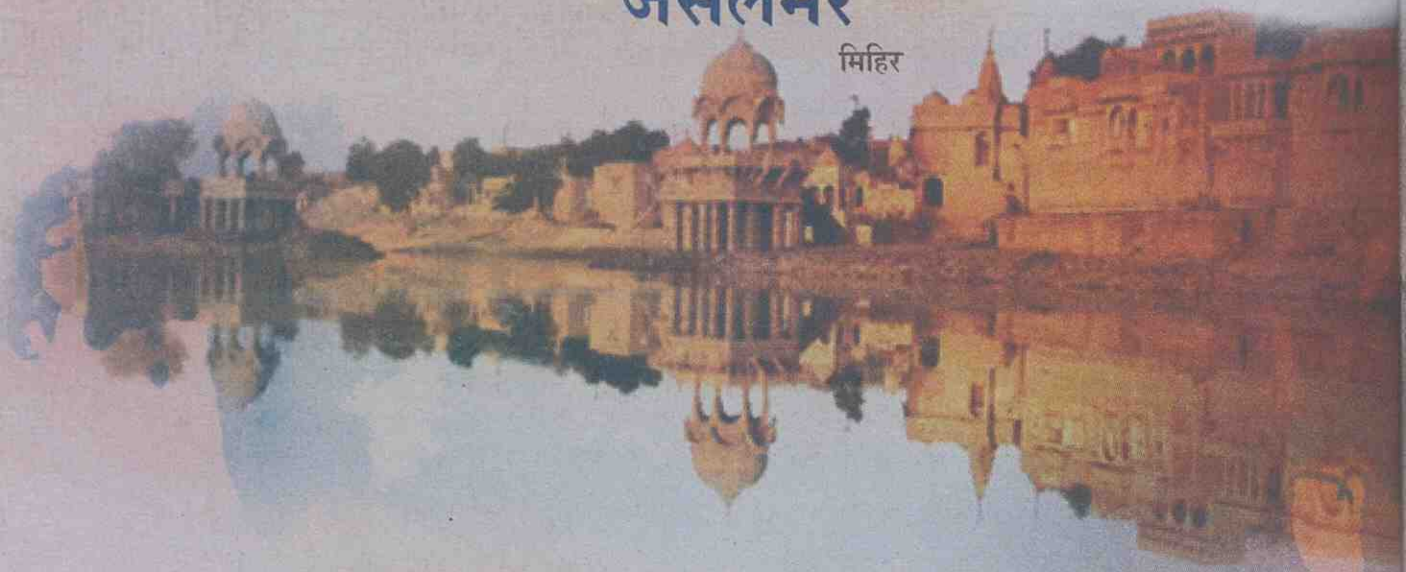

जैसलमेर की यात्रा और सिर्फ़ तीन दिन का समय... बहुत कम है दोस्तो। लेकिन पिछली दिवाली में मेरी इस 20-20 ओवर के मैच जैसी जैसलमेर यात्रा में मुझे ऐसे कई किस्से मिले जो हमेशा याद रहेंगे। इनमें से कुछ मज़ेदार किस्से यहाँ तुम्हारे साथ बाँट रहा हूँ। उम्मीद है तुम्हें भी मज़ा आएगा इन्हें सुनकर...

जयपुर से चले थे रात में। रेलगाड़ी में रात को ओढ़ने-बिछाने का सारा इंतज़ाम साथ लेकर। सुबह जोधपुर तक तो सब ठीक था। उसके बाद जैसे-जैसे रेल का आगे का सफ़र शुरू हुआ एक-एक करके हमारे गरम कपड़े उतरने लगे। मुझे बचपन में देखी सत्यजीत राय की फिल्म गूपी गाईन, बाघा बाईन याद आ गई। इस फिल्म में भी अचानक ठंडे देश से गरम प्रदेश में पहुँच जाने पर गूपी और बाघा ऐसे ही अपने गरम कपड़े उतारते हैं। दोपहर में रेल के रास्ते में ही धूल का तूफ़ान आया। सारी खिड़कियाँ बंद कर लेने के बावजूद जो धूल सारे डब्बे में भरी कि पूछो मत। हमारे गरम कपड़े जो बैग के अंदर गए तो फिर वापस जयपुर आकर ही निकले!

जैसलमेर रेलवे स्टेशन आने से कुछ पहले ही मशहूर सोनार किला (सोने का किला) दिखने लगता है। सुना है इस किले को यह नाम सत्यजीत राय के इस नाम से एक मशहूर उपन्यास से मिला है। यह एक जासूसी उपन्यास था जिसमें सत्यजीत राय द्वारा रचित जासूस फेलूदा एक उलझी गुत्थी सुलझाने पूरा भारत पार करते हुए कलकत्ता से जैसलमेर आता है। उपन्यास में जैसलमेर के रास्ते में आने वाली कई जगहों का भी ज़िक्र आता है। इसीलिए

पोखरण और रामदेवरा से गुज़रते हुए मुझे कई बार सोनार किला की याद आई। अगले दिन हम इस किले को देखने गए।

सोनार किला एक मज़ेदार जगह है। किला होने के बावजूद इसके भीतर बड़ी संख्या में परिवार रहते हैं। इन परिवारों के लिए आने वाले पर्यटक ही उनकी रोज़ी-रोटी हैं। किले के अंदर एक लाइन से दुकानें सजी हैं। इनमें सजावटी सामानों से लेकर खूबसूरत कपड़ों तक सब मिलता है। एक जगह तो इतनी रंग-बिरंगी जूतियाँ सजी थीं कि मुझे होली के रंग याद हो आए।

जब मैं तस्वीर लेने के लिए किसी खूबसूरत दुकान के बाहर रुकता तो अचानक कई आवाजें मुझे भीतर बुलाने लगतीं! एक दुकान के बाहर मैंने लिखा देखा, "थैंक यू लोनली प्लैनेट फॉर मेकिंग अस अनइम्प्लॉइड" (हमें बेरोज़गार बनाने के लिए लोनली प्लैनेट तेरा शुक्रिया)। पता चला कि दुनिया भर में चर्चित पर्यटक गाइड लोनली प्लैनेट में किसीने इस जगह के बारे में कुछ खराब लिख दिया है। इसलिए विदेशी पर्यटकों का यहाँ आना कम हो गया है। भई वाह, जैसलमेर के व्यवसायियों का गुस्सा दिखाने के इस अंदाज़ की क्या बात है!

दुनिया सच में बहुत छोटी है दोस्तो! देश के इस सुदूरवर्ती पश्चिमी ज़िले में हमें "दुनिया की छत" तिब्बत से आए दोस्त भी मिले। ये लोग किले के अंदर ही एक रेस्तराँ चलाते हैं जिसका नाम है - फ्री तिब्बत रूफ टॉप रेस्टोरेंट। अब कहाँ तिब्बत की बर्फ़ और कहाँ जैसलमेर की तेज़ गरमी... लेकिन काम की तलाश क्या-क्या

"थैंक यू लोनली प्लैनेट फॉर मेकिंग अस अनइम्प्लॉइड" व्यवसाइयों की इस प्रतिक्रिया पर आपका विचार क्या है?

नहीं करवाती। और फिर पेट भर खाना, सर ढँकने को छत मिल जाए तो परदेस भी घर हो जाता है।

'पेट भर खाना, सर ढँकने को छत मिल जाए तो परदेस भी घर हो जाता है।' किस सामाजिक सच्चाई की ओर यह कथन इशारा करता है?

शाम को हम सम देखने गए। सम यानी असली रेगिस्तान। यह जगह जैसलमेर शहर से कोई 20-30 किलोमीटर दूर होगी। रेत के दूर-दूर तक फैले टीलों को देखने और ऊँट की सवारी करने यहाँ बहुत लोग आते हैं। हम जिस ऊँट पर बैठे उसका नाम माईकल था। मुझे डर लगा कि कहीं इसने माइकल जैक्सन की तरह नाचना शुरू कर दिया तो हमारा क्या होगा! लेकिन माईकल एक सीखा हुआ ऊँट था। उसने हम नौसिखिए लड़कों को ज़रा भी परेशानी नहीं होने दी। हमें लगता रहा कि हम उसे चला रहे हैं लेकिन दरअसल वो हमें घुमा रहा था। उसके मालिक उसे जैसा कहते वो वैसा ही करता। वो अपने मालिक की आवाज़ से ही समझ जाता था कि कब उठना है, कब चलना है।

और फिर आया दिवाली का दिन। उस दिन हम हिंदुस्तान की आखिरी सीमा (बॉर्डर) देखने गए। बॉर्डर जैसलमेर से कोई 100-130 किलोमीटर दूर है। रास्ते में पहले आता है -

रामगढ़। यह एक छोटा-सा कस्बा है। यहीं से बी.एस.एफ. (सीमा सुरक्षा बल) का इलाका शुरू हो जाता है। जैसलमेर से करीब 110 किलोमीटर दूर है तनोट। यहाँ भी बी.एस.एफ. की बड़ी चौकी है। यहाँ से सीमा काफ़ी नज़दीक है। सीमा पर तैनात इन जवानों के साथ हमने सीमारेखा देखी। अब तो सारी सीमा पर तारबंदी हो गई है। एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ जाना बहुत मुश्किल है। लेकिन देखो तो दोनों ओर एक जैसा ही सब कुछ दिखता है। ज़मीन एक, धूप एक, रूखापन एक, धूल भरी हवाएँ एक... देखकर लगा कि फिर अलग क्या है? पानी की किल्लत और ज़रूरतें दोनों तरफ़ एक जैसी हैं। अब तो जानवर भी दूसरी तरफ़ घास चरने नहीं जा सकते।

यह यात्रा एक मज़ेदार अनुभव था।

■ **यह खंड पढ़ें,**

> **अब तो सारी सीमा पर तारबंदी हो गई है। एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ जाना बहुत मुश्किल है। लेकिन देखो तो दोनों ओर एक जैसा ही सब कुछ दिखता है। ज़मीन एक, धूप एक, रूखापन एक, धूल भरी हवाएँ एक... देखकर लगा कि फिर अलग क्या है? पानी की किल्लत और ज़रूरतें दोनों तरफ़ एक जैसी हैं। अब तो जानवर भी दूसरी तरफ़ घास चरने नहीं जा सकते।**

लेखक के इस कथन से आपकी राय क्या है?
चर्चा करें।

■ **यह खंड पढ़ें,**

> **दुनिया सच में बहुत छोटी है दोस्तो! देश के इस सुदूरवर्ती पश्चिमी ज़िले में हमें "दुनिया की छत" तिब्बत से आए दोस्त भी मिले। ये लोग किले के अंदर ही एक रेस्तराँ चलाते हैं जिसका नाम है - फ्री तिब्बत रूफ टॉप रेस्टोरेंट। अब कहाँ तिब्बत की बर्फ़ और कहाँ जैसलमेर की तेज़ गरमी... लेकिन काम की तलाश क्या-क्या नहीं करवाती। और फिर पेट भर खाना, सर ढँकने को छत मिल जाए तो परदेस भी घर हो जाता है।**

वर्तमान सामाजिक परिवेश पर टिप्पणी करते हुए लेखक के इस कथन का समर्थन करें।

■ जैसलमेर में देखने के लिए क्या-क्या हैं?.
सूची बनाएँ। इसके लिए पाठ के बाहर के स्रोतों का भी लाभ उठाएँ।

-
-
-
-
-
-
-
-

■ सूची के आधार पर जैसलमेर यात्रा की सहायता के लिए एक ब्रॉशर तैयार करें।

■ इन रूपों पर ध्यान दें।

मेरी	मुझे
इनमें	तुम्हें
उसके	जिसमें
उनकी	इसने

इनके मूल शब्द पहचानें और रूप परिवर्तन के कारण पर चर्चा करें।

मिहिर पांडेय

जन्म : 2 सितंबर 1985, उदयपुर

आपका बचपन 'बनस्थली विद्यापीठ' में बीता। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए, एम.फिल, पीएच.डी आदि की उपाधियाँ लीं। आप लोकप्रिय सिनेमा के अध्येता हैं। आपने नवभारंत टाइम्स, तहलका और कथादेश के लिए हिंदी सिनिमा पर कॉलम लिखे। कई पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख और निबंध प्रकाशित हैं। आप सिनेमा पर 'आवारा हूँ' ब्लॉग का संचालन करते हैं।

जगहों के नाम

तेजी ग्रोवर

जब हम किसी जगह को
नाम में बदल देते हैं
जैसे धूपगढ़
जैसे रजत प्रताप
या फिर हांडी खोह
तो हम अपनी आँखें
बस वहीं के लिए बचाकर चलते हैं

रास्ते में
साल के फूल महकते हैं-
व्यर्थ।
जंगली गिलहरी डगारें फाँदती है-
व्यर्थ।
पक्षी की छाया घास पर उड़ती है-
व्यर्थ।

जंगल-पहाड़ से होते हुए
हम केवल एक नाम तक पहुँचते हैं।

कविता पढ़ी है न? यहाँ कवि ने किसकी ओर इशारा किया है?

बसंत मेरे गाँव का

आंकड़ा	- अंक figure
एकतारा	- एक तार का बाजा
ऐन	- बिलकुल ठीक
खच्चर	- കോവർ കഴുത mule கோவேரு கழுதை ಹೇಸರಗತ್ತೆ
गागर	- घड़ा
चटखना	- फूटना പൊട്ടിവിരിയുക பொட்டிவிரிவது ಅರಳು
चैत	- चैत्र का महीना, फागुन के बाद वाला महीना
जत्था	- दल
जश्न	- दलसा, त्यौहार
जेठ	- बैसाख और आषढ़ के बीच का महीना
ढलान	- ढालवाला भूखंड ചരിവ് சாய்வு ಇಳಿಜಾರು
थाप	- ध्वनि
दम	- जीवन शक्ति
धामा	- തീർത്ഥ സ്ഥലം holy place புனித இடம் ಪುಣ್ಯಸ್ಥಳ
नकद	- ready cash
बालिश्त	- ഒരു ചാൺ നീളം ஒரு சாண் நீளம் ಒಂಭತ್ತು ಇಂಚಿನ ಅಳತೆ
बुराँस	- हिमालय प्रांत का एक विशेष फूल
बौराना	- उन्मत्त होना
महज	- सिर्फ़
मुस्तैदी	- तेज़ी
सरसों	- കടുക് mustard குடுகு ಸಾಸಿವೆ

जैसलमेर

अंदाज़ - വിലയിരുത്തൽ valuation மதிப்பீடு ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ

अहमियत - महत्व

इज़ाज़त - അനുമതി அனுமதி, ಅನುಮತಿ

इंतज़ाम - arrangement ஏற்பாடு ವ್ಯವಸ್ಥೆ

उम्मीद - പ്രതീക്ഷ expectation - எதிர்பார்ப்பு ನಿರೀಕ್ಷೆ

कस्बा - छोटा शहर

किल्लत - ദൗർലഭ്യം scarcity இல்லாய்மயை, ವಿರಳ

किस्सा - ആഖ്യാനം narration கதை சொல்லுதல், ಆಖ್ಯಾನ

के बावजूद - इतना होते हुए भी, होने पर भी

गुत्थी सुलझाना - പ്രശ്നപരിഹാരം കാണുക/കുരുക്കഴിക്കുക to solve a knotty problem - பிரச்சனைக்குத் தீர்வு காணுதல்/ தீர்வு காணல் ಸಮಸ್ಯೆ ಬಗೆಹರಿಸು

जासूसी - കുറ്റാന്വേഷണം detective துப்பறிதல் ಪತ್ತೆದಾರಿ

जिक्र - സ്മരണ, mention - நினைவு ಸ್ಮರಣ

टीला - മൺകൂന, மண்மேடு, ಮಣ್ಣಿನ ರಾಶಿ

नसीब होना - मिलना, प्राप्त होना

नुकसान - നഷ്ടം நஷ்டம் ನಷ್ಟ

नौसिखिया - हाल में काम सीखनेवाला (हाल-लकड़ी के पहिए पर चढ़ाया जानेवाला लोहे का पट्टा)

बकाया - ബാക്കിയുള്ള remaining மீதியுள்ள ಉಳಿದಿರುವ

बर्बाद होना - നശിക്കുക நாசமடைந்த , ನಾಶವಾಗು

मवेशी - കന്നുകാലി cattle - கால்நடை ಜಾನುವಾರು

यकीन - വിശ്വാസം நம்பிக்கை ವಿಶ್ವಾಸ

शख्स - व्यक्ति

सफ़र	-	यात्रा
सलामत	-	സുരക്ഷിതമായ பாதுகாப்பான ಸುರಕ್ಷಿತವಾದ
साथ बाँटना	-	to share പങ്കെടുക്കുക பங்குகொள்வது ಭಾಗವಹಿಸು

जगहों के नाम

डगार	-	मार्ग
फाँदना	-	कूदकर लाँघना
महकना	-	सुगंधित होना
रास्ता	-	मार्ग
हांडी खोह	-	ഒളിച്ച് വയ്പ്പ് மறைத்து வை ಅಡಗಿಸು

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्र का विश्लेषण करके आशय प्रस्तुत करता है।
- लेख पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- लेख की विशेषताएँ समझता है और चर्चा में भाग लेता है।
- पोस्टर तैयार करता है।
- वर्तमान काल के बारे में समझता है और वर्तमान काल के वाक्यों को पहचानकर लिखता है।
- यात्रावृत्त पढ़ता है और आशय प्रस्तुत करता है।
- ब्रॉशर तैयार करता है।
- सर्वनाम और प्रत्ययों का योग समझता है और प्रत्यययुक्त सर्वनाम पहचानकर लिखता है।

इकाई 5

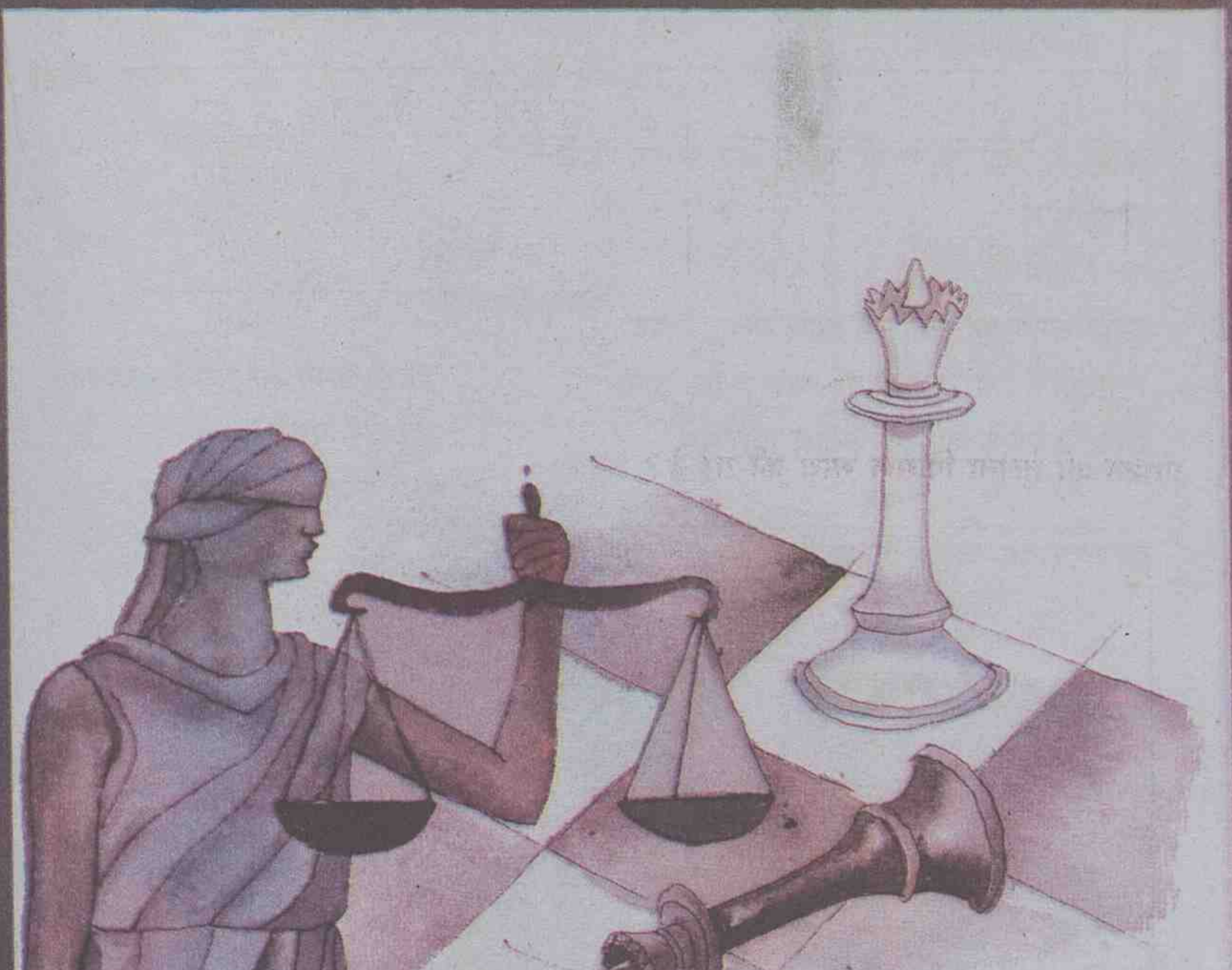

भूलकर भेद-भाव की बातें
करें कुछ लगाव की बातें।

बच्चे काम पर जा रहे हैं

राजेश जोशी

कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह-सुबह
बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?

'हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह'
ऐसा क्यों कहा गया है?

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग-बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक
तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?
कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है लेकिन इससे भी ज़्यादा यह
कि हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल

पर दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुज़रते हुए
बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

ये पंक्तियाँ पढ़ें।

क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने?

क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग-बिरंगी किताबों को?

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें?

क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें?

क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के
आँगन खत्म हो गए हैं एकाएक?

इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं?

चर्चा करें।

कविता की आस्वादन-टिप्पणी तैयार करें।

■ बच्चे काम पर क्यों जाते होंगे?

लिखें।

■ पोस्टर तैयार करें।

अपने बचपन से वंचित कई बच्चे हैं। उनकी मदद करना हमारी भी ज़िम्मेदारी है। बालश्रम के विरुद्‌ध एक पोस्टर तैयार करें।

राजेश जोशी

जन्म : 18 जुलाई 1946, नरसिंहगढ़, मध्यप्रदेश

हिंदी के आधुनिक कवियों में प्रमुख। आपकी कविताएँ गहरी सामाजिक सच्चाई की कसौटी हैं। आपके काव्यों में आत्मीयता और गेयता है। मनुष्यता को बचाए रखने का एक निरंतर संघर्ष आपकी कविताओं की विशेषता है।

समर गाथा, मिट्टी का चेहरा, दो पंक्तियों के बीच आदि आपके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं। 'दो पंक्तियों के बीच' काव्य-संग्रह के लिए आपको साहित्य अकदमी पुरस्कार (2002) प्राप्त हुआ था।

गुठली तो पराई है

कनक शशि

यूँ तो बड़ी बुआ गुठली को अच्छी लगती हैं पर उनसे बात करना उसे कुछ खास पसंद नहीं। वैसे बातें अगर खाने की या उनके बचपन की हों तो ठीक है, पर नसीहतें... उफ़ !!

"ऐसा मत करो", "ऐसे पट-पट मत बोलो", "ऐसे धम-धम मत चलो..."। एक दिन गलती से उसने पूछ ही लिया, "क्यों?" तो बस शुरू हो गई, "अरे छोरी, लोग नाम तो तेरी माँ को ही रखेंगे। कहेंगे कुछ सिखाया ही नहीं। ऐसे ही करेगी क्या अपने घर जाकर?

'यूँ तो बड़ी बुआ गुठली को अच्छी लगती हैं पर उनसे बात करना उसे कुछ खास पसंद नहीं।' क्यों?

गुठली बोली, "अपना घर? यही तो है मेरा घर, जहाँ मैं पैदा हुई।" बुआ हँसके बोली, "अरी

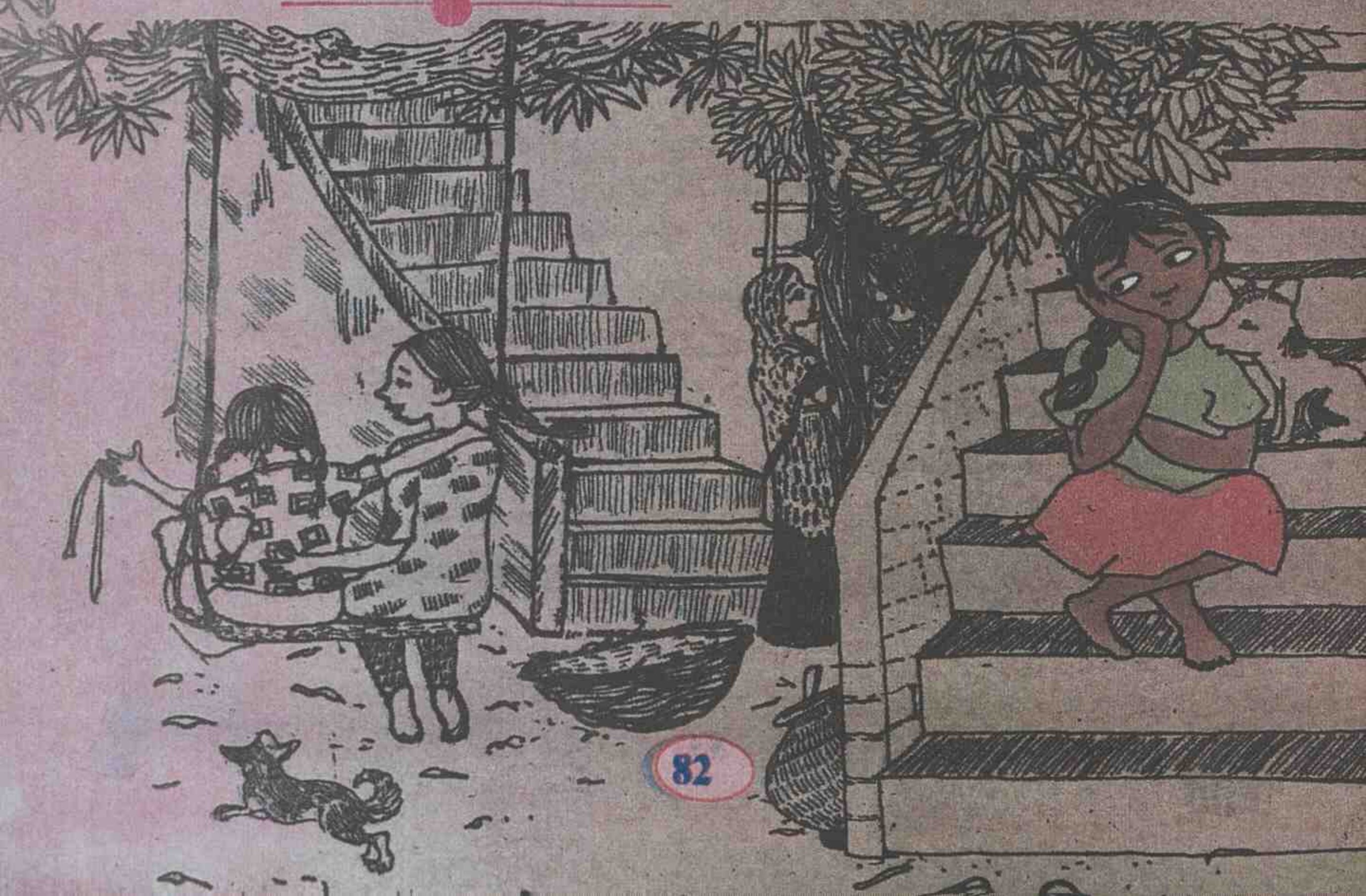

बेवकूफ़ यह घर तो पराया है। बाकी लड़कियों की तरह तू भी किसी और की अमानत है। ससुराल ही तेरा असली घर होगा। जैसे देख, पैदा तो मैं भी इसी घर में हुई थी, पर अब तेरे फूफाजी का घर ही मेरा घर है। कुछ समझी?"

'अरी बेवकूफ़ यह घर तो पराया है।' बुआ गुठली से ऐसा क्यों कहती है?

गुठली ठुनक के बोली, "मैं नहीं मानती।" और बाहर चली गई। पीछे से बुआ की आवाज़ सुनाई दी, "चौदह की हो गई पर अकल नहीं आई छोरी को।" माँ बोली, "बचपना है दीदी समझ जाएगी।" माँ को बुआ का साथ देता देख गुठली गुस्से के साथ उदास भी हो गई और सीढ़ियों पर बैठ गई। सोचती रही क्या यह घर उसका नहीं? क्या उसके आम की कैरियाँ वो कभी नहीं खा पाएगी? उसका कुत्ता, नानू भी उसका नहीं? बगीचे में उसकी बनाई क्यारियाँ, मछलियों के लिए तालाब... क्या वे भी उसके नहीं?

इतने में माँ उसे ढूँढ़ती वहीं आ पहुँची। गुठली को उदास देख गले लगाकर बोलीं, "बेटा, बुआ की बात का बुरा मत मान। और जो कल होना है उसे लेकर आज क्यूँ परेशान होना। ये दिन फिर लौट के नहीं आनेवाले हैं इन्हें जी भर के जी ले।" माँ की बातों से गुठली और भी हताश हो गई। लगा जैसे उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई हो। उसे याद आया पिछले साल दीदी की शादी में, सब कितने खुश थे। घर मेहमानों से भरा था। सारे चचेरे-ममेरे भाई-बहन आए हुए थे। गुठली भी कितनी खुश थी-कोई रोक-टोक नहीं बस फुल मस्ती थी। इसी बीच शादी के कार्ड छपके आए। गुठली बड़ी उत्सुक थी। जैसे-तैसे पूजा-पाठ के बाद कार्ड हाथ में आया तो गुठली का मुँह उतर गया। वह ताऊजी के पास जाकर बोली, "देखिए भइया मेरा नाम कार्ड में ... भूल गया?" ताऊजी बोले, "भूला नह... अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते।" गुठली, "पर ताऊजी उसमें भइया के छोटे-से बेटे का भी नाम है जो अभी बोल भी नहीं सकता तो मेरा...।"

लगा जैसे उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई हो। गुठली को ऐसा क्यों लगता है?

"तो क्या हुआ? तेरा नाम तेरे अपने कार्ड में छपेगा यहाँ नहीं... अब चल भाग यहाँ से।"

गुठली रोने लगी, तो बुआ ने डाँटा, "क्या शादी के घर में मनहूसियत फैला रही है।" तभी माँ ने अपने हाथ से उसका नाम कार्ड पे लिख दिया। ये अक्षर छपाई जैसे नहीं थे, फिर भी गुठली माँ के प्यार से मान गई।

> *"पर ताऊजी उसमें भइया के छोटे-से बेटे का भी नाम है जो अभी बोल भी नहीं सकता तो मेरा...।" यहाँ कौन-सी सामाजिक अव्यवस्था की झलक मिलती है?*

पर अब तो हद हो गई। और गुठली चुप रहने वालों में से नहीं है। वो अपनी दीदी के साथ बिताए मज़ेदार दिनों की याद करने लगी। साथ-साथ कहानियाँ पढ़ना, गाने गाना, चित्र बनाना, मस्ती करना और खूब हँसना। पर शादी के तीन दिन बाद जब दीदी घर आई तो एकदम बदल चुकी थी - न पहले जैसी मस्तीखोर, न बातूनी। अब वो साड़ी पहन सिमटी-सिमटी रहने लगी थी। और तो और जिस भाई को वो "नकटू" कहकर बुलाती थी, उसे अब वो "भइया" कहने लगी थी। हालाँकि शादी तो भइया की भी हुई है, पर वो अब भी अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलता है, खाने में नखरे अब पहले से भी ज़्यादा करने लगा है और वो अभी भी दीदी को "चुहिया" बुलाता है। सब कुछ कितना ऊटपटाँग है। देर रात तक यही सब सोचती रही गुठली। फिर कुछ सोच मुसकराई और सो गई।

सुबह गुठली उठी और समय से काफ़ी पहले ही स्कूल के लिए तैयार हो गई। और खिड़की से बगीचे को निहारने लगी। तभी पापा आए और बोले, "बेटा आज पौधों को पानी नहीं पिलाया क्या?" "नकटू... मतलब भैया से कहो। यह सब उसीका है, तो वही करे... और वैसे भी मैं तो पराया धन हूँ..." गुठली तपाक से बोली।

तभी चौके से ताईजी की आवाज़ आई, "गुठली अपने ताऊजी को चाय दे आ।" गुठली धीरे-धीरे चौके की दहलीज़ तक गई और बोली, "देखिए ताईजी, मैं पराई हूँ यानी मेहमान, मुझसे काम करवाना कुछ अच्छी बात नहीं है।"

ताईजी ने गुठली की तरफ़ देखा और ह..ह कह चाय देने चली गई। माँ गुठली को अभी टिफ़िन पैक करने को बोलने वाली थी पर यह सब सुनकर खुद ही करने लगी। तभी भैया आ गया, "गुठलिया अपने नानू को खाना नहीं दिया?" "देखो भाई साहब, आप कुल दीपक हो, यह घर, यह बगीचा और यह नानू सब आपका ही है, तो बेहतर होगा आप ही इन सबकी देखभाल करो... और वैसे भी मैं तो पराई अमानत हूँ।" सब मुँह बाए गुठली को देखते रहे और गुठली टिफ़िन-बैग उठाकर स्कूल के लिए चल दी।

■ पढ़ें।

- "अरी बेवकूफ़ यह घर तो पराया है। बाकी लड़कियों की तरह तू भी किसी और की अमानत है। ससुराल ही तेरा असली घर होगा। जैसे देख, पैदा तो मैं भी इसी घर में हुई थी, पर अब तेरे फूफाजी का घर ही मेरा घर है। कुछ समझी?"
- "भूला नहीं है रे... अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते।"

ये वाक्य किसकी ओर इशारा करते हैं?

इसपर आपकी राय क्या है?

■ पढ़ें।

गुठली अपने मन की बातें सहेली को बताना चाहती है।

लिखें सहेली के नाम गुठली का पत्र।

■ सामाजिक असमानता के खिलाफ़ गुठली अपने ढंग से आवाज़ उठाती है। असमानताओं के विरुद्ध आप क्या-क्या कर सकते हैं?

कनक शशि

आपने बच्चों के लिए कई कहानियाँ लिखी हैं। मुख्य रूप से आप चित्रकार हैं। आप युनेस्को, एन सी ई आर टी, एकलव्य आदि संस्थाओं से जुड़कर काम करती हैं।

तुम लड़की हो तुम्हें क्यों पढ़ना है?

कमला भसीन

बाप-बेटी से
पढ़ना है! पढ़ना है! क्यों पढ़ना है?
पढ़ने को बेटे काफ़ी हैं, तुम्हें क्यों पढ़ना है?
बेटी- बाप से
जब पूछा ही तो सुनो
मुझे क्यों पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ
मुझे पढ़ना है
पढ़ने की मुझे मनाही है सो पढ़ना है
मुझमें भी तरुणाई है सो पढ़ना है
सपनों ने ली अँगड़ाई है सो पढ़ना है
कुछ करने की मन में आई है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है

मुझे दर-दर नहीं भटकना है सो पढ़ना है
मुझे अपने पाँव चलना है सो पढ़ना है
मुझे अपने डर से लड़ना है सो पढ़ना है
मुझे अपने आप ही गढ़ना है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है

कई ज़ोर जुल्म से बचना है सो पढ़ना है
कई कानूनों को परखना है सो पढ़ना है
मुझे नए धर्मों को रचना है सो पढ़ना है
मुझे सब कुछ ही तो बदलना है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है

हर ज्ञानी से बतियाना है सो पढ़ना है
मीरा का गाना गाना है सो पढ़ना है
मुझे अपना राग बनाना है सो पढ़ना है
अनपढ़ का नहीं ज़माना है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है...

मदद लें...

बच्चे काम पर जा रहे हैं

इमारत	- मकान
कोहरा	- कुहरा, धुंध
ढंकना	- ढकना
ढह जाना	- ध्वस्त होना
मदरसा	- विद्यालय
हस्बमामूल	- मामूल के मुताबिक

गुठली तो पराई है

यूँ	- इस प्रकार
नसीहत	- सदुपदेश
छोरी	- लड़की
अमानत	- संपत्ति
ससुर	- पति या पत्नी के पिता
बचपना	- सयाने लोगों द्वारा किया गया शिशु-कार्य
हद	- सीमा
मस्ती करना	- मज़ा लेना
बातूनी	- खूब बातें करने वाला
ऊटपटांग	- बिना क्रम के
तपाक	- जल्दी
चौका	- रसोईघर में खाने के लिए तैयार की गई जगह

तुम लड़की हो तुम्हें क्यों पढ़ना है

काफ़ी	- बहुत
ज़माना	- काल, समय
जुल्म	- अत्याचार, अन्याय
परखना	- अच्छे-बुरे की पहचान करना
मनाही	- निषेध

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्र का विश्लेण करके आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता के लिए आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।
- बालश्रम के कारणों पर विचार करता है और सूचीबद्ध करता है।
- कहानी पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- किसी सामाजिक मुद्दे पर अपनी राय प्रकट करता है।
- पत्र लिखता है।

बच्चों के हक

प्यारे बच्चो,

क्या आप जानना चाहेंगे कि आपके क्या-क्या हक हैं? अधिकारों का ज्ञान आपको सहभागिता, संरक्षण, सामाजिक नीति आदि सुनिश्चित करने की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन देगा। आपके अधिकारों के संरक्षण के लिए अब एक आयोग है– 'केरल राज्य बालाधिकार संरक्षण आयोग'। देखें, आपके क्या-क्या हक हैं–

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हक
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ जीने का हक
- उत्तरजीविता का एवं सर्वांगीन विकास का हक
- धर्म, जाति, वर्ग एवं वर्ण की संकीर्णता से बढ़कर आदर पाने एवं मान्यता प्राप्त करने का हक
- मानसिक, शारीरिक एवं लिंगपरक अतिक्रमण से परिरक्षण पाने का हक
- भागीदारी का हक
- बालश्रम से एवं खतरनाक पेशों से मुक्ति का हक
- बाल विवाह से परिरक्षण पाने का हक
- अपनी संस्कृति जानने एवं तदनुरूप जीने का हक
- उपेक्षाओं से परिरक्षण पाने का हक
- मुफ़्त तथा ज़बरदस्त शिक्षा पाने का हक
- खेलने तथा पढ़ने का हक
- सुरक्षित एवं प्रेमयुक्त परिवार तथा समाज में जीने का हक

कुछ दायित्व

- स्कूल एवं सार्वजनिक संस्थाओं का परिरक्षण करना।
- स्कूल एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं में समय की पाबंदी रखना।
- अपने माता-पिता, अध्यापक, स्कूल के अधिकारी तथा मित्रों का आदर करना और उन्हें मानना।
- जाति-धर्म-वर्ग-वर्ण की संकीर्णताओं से बढ़कर दूसरों का आदर एवं सम्मान करना।

Contact Address:

Kerala State Commission for Protection of Child Rights
'Sree Ganesh', T. C. 14/2036, Vanross Junction
Kerala University P. O., Thiruvananthapuram - 34, Phone : 0471 - 2326603
Email: childrights.cpcr@kerala.gov.in, rte.cpcr@kerala.gov.in
Website : www.kescpcr.kerala.gov.in

Child Helpline - 1098, Crime Stopper - 1090, Nirbhaya - 1800 425 1400

Kerala Police Helpline - 0471 - 3243000/44000/45000

Online R. T. E Monitoring : www.nireekshana.org.in

State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Vidyabhavan, Poojappura, Thiruvananthapuram
Kerala-695 012. Website www.scert.kerala.gov.in
e-mail scertkerala@gmail.com

Printed by the Chairman & Managing Director
Kerala Books and Publications Society
(An Undertaking of the Government of Kerala)
Kakkanad, Kochi-682 030